मयंक के गीत एवं गीतिकाऐं

कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

मयंक के
गीत एवं गीतिकाऐं

अपनी आखों में सूरज छुपाए हुए।
हम भटकते रहे रौशनी के लिए।।

कृष्ण कुमार सिंह "मयंक"

कवि	:	कृष्ण कुमार सिंह ''मयंक''
नाम पुस्तक	:	'मयंक के गीत एवं गीतिकाएँ'
प्रकाशन का वर्ष	:	दिसम्बर 1994
प्रतियाँ	:	1000
मुखपृष्ठ	:	नईम अहमद
मूल्य	:	40/-

सभी अधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं

मिलने के पते :-

- 76B, स्टेशन रोड, आगरा कैण्ट, आगरा
- H.I.G.-5 न्यू शाहगंज, आगरा
- सचिन अमन, जैन गली, सिकन्दरा, आगरा—7

यह पुस्तक 'नवयुग' एवं 'इन्द्रधनुष' नामक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के सौजन्य से प्रकाशित हुई है।

लेजर टाइपसैटिंग बाई लिपि ग्राफिक्स, G-3, कमला नगर, आगरा ✆ 381491

कवि की ओर से

लीजिए ये मेरा दसवाँ काव्य संग्रह 'मयंक के गीत एवं गीतिकाएँ' आपके सामने उपस्थित है।

बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि हिन्दी के गीत एवं गीतिकाओं का संग्रह प्रकाशित हो परन्तु कुछ विशेष कारणों से यह सम्भव न हो सका। अब साहित्यिक संस्था 'नवयुग' और 'इन्द्रधनुष' के सौजन्य से यह संकलन आपके सामने आ गया है।

इस संकलन के प्रकाशन में मेरे अनेक मित्रों ने मुझे सहयोग दिया है जिनमें, जनाब 'ख्वाब' अकबराबादी, शम्भू मेहरा, डॉ. राजेन्द्र मिलन, श्री विक्रम सिंह, डॉ. महाराज सिंह परिहार, सचिन अमन, तथा मेरी अर्धांगिनी श्रीमती सरोज सिंह विशेष रूप से उल्लेखनीय है मै इन सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ–

इस पुस्तक में मैंने सामाजिक, सांस्कृतिक तथा देश प्रेम सम्बन्धी अपने भावों को प्रधानता के साथ प्रस्तुत किया है क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस टूटन के दौर में परस्पर भाईचारे एवं देशप्रेम की नितान्त आवश्यकता है।

मैंने क्लिष्ट उर्दू या क्लिष्ट हिन्दी का प्रयोग न करके रचनाओं में सरल सुबोध तथा नित्य प्रति व्यवहृत भाषा ही का प्रयोग किया है। ताकि मेरी रचनाएँ एक आम आदमी के लिए भी बोधगम्य हों।

अन्त में शुभकामनाओं के साथ यह निवेदन है कि संकलन के विषय में पाठकों की बहुमूल्य राय की मुझे प्रतीक्षा रहेगी।

कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, मध्य रेलवे, आगरा
निवास–H.I.G.-5 न्यू शाहगंज, आगरा

मेरे ख़याल से

भावों की छन्द बद्ध अभिव्यक्ति को 'कविता' या 'शायरी' कहते हैं। कोई भाव कितना ही रसपूर्ण (गद्य भी रसपूर्ण हो सकता है), गूढ़, श्रेष्ठ व अलंकार पूर्ण क्यों न हो, वह कविता तभी कहलाएगी जब उसे छन्दबद्ध कर दिया जाएगा महाकवि कालिदास की काव्य परिभाषा से उपर्युक्त विचार की पुष्टि होती है। कालिदास की काव्य परिभाषानुसार "संगीत पूर्ण विचार को कविता कहते हैं।"

वास्तव में समान भाव गद्य–पद्य में प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो व्यक्ति भावों को पद्य में प्रस्तुत कर सकता है, वह कवि कहलाता है, जैसे इस काव्य संकलन में जनाब कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' ने अपने विचारों की छन्दबद्ध अभिव्यक्ति की है। इन सभी भावों को गद्य में भी प्रस्तुत किया जा सकता है, मगर तब वे कविता नहीं कहलाएंगी।

छन्द प्रकृति में रचे बसे हैं। संसार की प्रत्येक प्राकृतिक क्रिया छन्दबद्ध होती है। चाहे वो हवा का चलना हो, फूल का खिलना हो रात–दिन का क्रम हो या कुछ भी हो। वास्तव में 'छन्द' काव्य की आत्मा है–

उस्ताद है माहिर है उसे जान हबीब
कहता है जो 'ख्वाब' वही मान हबीब
है जिस्मे–सुख़न ख़यालो–अल्फ़ाज़ मगर
है रुहे–सुख़न अ़रूज़ पहचान हबीब

छन्दयुक्त विचार यानि सजीव विचार यानि ग्राह्यता, यानि शीघ्र स्मरणीय यानि कालजयी यानि कविता।

नई कविता रूपी छन्दहीनता अब समाप्त प्रायः हैं, जिसकी मिसाल मयंक साहब का ये छन्दबद्ध काव्य संकलन है। मयंक साहब ने आधुनिक छन्द तथा छन्द नियमों में इस काव्यकृति का सृजन किया है। कुछ रचनाओं में उन्होंने उर्दू छन्दों का वह रूप अपनाया है जो "लै" आधारित है या छन्द विशेष का हिन्दीकरण है।

जैसे–उर्दू बहर मुज़ारे अख़रब मकफ़ूक़ महज़ूफ़
अर्कान– मफ़ऊल फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
वज़्न– २२१ २१२१ १२२१ २१२
को निम्नलिखित विभिन्न मात्रा क्रमों में एक ही रचना में प्रयोग किया है और लै भी नहीं बिगाड़ी है–

मात्राक्रम– २ २ १ १ २ २ १ १ २ २ १ २ १ २
२ २ १ १ २ २ १ १ २ २ १ १ २ २
२ २ १ २ १ २ १ २ २ २ १ २ १ २
२ २ १ २ १ २ १ १ २ २ १ १ २ २

हिन्दी में इस छन्द को 'बिहारी' नाम दिया गया है।

उदाहरण–काँटों की झाड़ियाँ हैं, मरुस्थल है दूर तक।
कोई दरख़्त फूल ओ फ़लदार नहीं है।।

या

मन्दिर में बज रही हैं सियासत की घण्टियाँ।
मस्जिद को इबादत से सरोकार नहीं है।।

इसी प्रकार बहरे मुतदारिक मख़्बून मुसक्कन,

अर्कान–फ़इलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़इलुन

वज़्न–1 1 2 2 2 2 2 1 1 2 के विभिन्न प्रयोगों में तस्कीन या तख़्नीक़ की पाबन्दी नहीं रखी है बल्कि लै को प्रधानता देते हुए हिन्दी के मात्रिक छन्दों का रूप दिया गया है जबकि मात्रा गिराने का विधान उर्दू छन्दों की प्रधानता को घोषित करता है।

उदाहरण–

नई फ़सल घर में आई है खेतों से खलिहानों से।
घर घर भरा हुआ है गेहूँ और चने के दानों से।।

अनेक उर्दू शब्दों को प्रचलित रूप में ग्रहण किया गया है जैसे फ़स्ल को फ़सल, शहर को शहर, अम्न को अमन वास्तव में जिस प्रकार अहले उर्दू ने फ़ारसी लिपि का अक्षमता के कारण जन्म को जनम, ब्राह्मण को बिरहमन, भ्रम को भरम रूप में अपनाया है उसी प्रकार अहले हिन्दी ने भी कुछ उर्दू शब्दों को अपनी सुविधानुसार अपनाया है।

इस संकलन के कला पक्ष सम्बन्धी उक्त विचार बिन्दुओं के अध्ययन से निश्चय ही संकलन के कलापक्ष को बेहतर समझा जा सकता है इस विचार व मयंक साहब को शुभकामनाओं के साथ,

'ख्वाब' अकबराबादी
आगरा–4

सूची

1. गणेशाय नमः 1
2. माता शारदे वर दे 2
3. ऐ वतन 3
4. मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए 5
5. वतन के लिए 6
6. मेरे हिन्दोस्तां 7
7. तिरंगे को नमन है 9
8. गणतंत्र 10
9. सियासत की घंटियां 11
10. राजनीति की मण्डी 12
11. वंदे मातरम् 13
12. फूल खिलाना ही होगा 14
13. ऐ वतन 15
14. जलने ना देंगे हम 16
15. ये अर्ज़ है इस दीवाने की 17
16. ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं 18
17. नई चेतना 19
18. एक सन्देश 20
19. भीमराव अम्बेडकर 21
20. नेलसन मण्डेला 22
21. भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान 23
22. आओ इसको नमन करें 25
23. मेहनत कश इंसान 27

24. दिन सुहाना ईद का 28
25. परिवार नियोजन 29
26. एक हो जाओ 30
27. मंहगाई 31
28. ऐसी क्या मजबूरी है 33
29. एड्स 34
30. नटवर लाल 36
31. मां शेरावाली 38
32. ओउम नमः शिवाय 39
33. भजन 41
34. ईद मुबारक 42
35. जवाहर लाल 43
36. राही 44
37. नजारा होली का 45
38. दोहे 46
39. धीरे-धीरे 47
40. ये गीत मेरे बंजारे हैं 48
41. सौंदर्य के चितेरे 50
42. बनवारानी 51
43. चलो मैखाने में 52
44. कैसे सो जाऊँ 53
45. श्रमिक 54
46. मुस्कराना चाहिए 55
47. मांझी गीत 56
48. याद आओगे तुम 57
49. लतीफा 58

50. हिन्दी को अपनाओ 59
51. गीत 60
52. लड़कियां 61
53. ख़त 62
54. देख के चलना 63
55. याद तुम्हारी 64
56. जिन्दगी भर की कमाई 65
57. मैं भी सोचूं तू भी सोच 66
58. कुछ भी नहीं 67
59. ऐसा होने वाला है 68
60. दौरे तरक्की 69
61. जिन्दगी 70
62. शाख से टूटा पत्ता 71
63. ख़त 72
64. गिद्ध 73
65. नदी के किनारे 74
66. डोलियाँ लेकर चलो 75
67. यार मिला दे 76
68. ग़ज़ल कह रहा हूँ 77
69. फूल 78
70. मुस्कराना बंद कर 79
71. रेल मज़दूर 80
72. उतार दो 82
73. दोहे 83
74. मज़दूर की बेटी 84

75. चुटकुले 85
76. होली है भई होली है 86
77. भइये 87
78. कम हो गई 88
79. ये बस्ती है अय्यारों की 89
80. गीतिकायें 90-132

गणेशाय नमः

गजानन नमन करो स्वीकार ।। गजानन।।
हे गौरी शंकर सुत, भव से नैया कर दो पार ।। गजानन।।

लम्बोदर गणपति नर जो भी निस दिन तुमको ध्यावै ।
कष्टों से छुटकारा पावै, मन वांछित फल पावै ।।
देव असुर गावें सब तुम्हरी लीला अपरम्पार ।। गजानन।।

माता की आज्ञा पालन में तुमने शीश कटाया ।
शंकर जी ने हो कर खुश तब गज का शीश लगाया ।।
हे गणेश गौरी के नंदन जग के पालनहार । गजानन।।

कोई भी शुभ कार्य करें पर पहले गणपति भजिए ।
कार्य सफल होगा निश्चय ही, हर संशय को तजिए ।।
श्री गणेश का वंदन है हर इक सुख का आधार ।। गजानन।।

मोदक प्रिय तुम मंगल दाता कृपा करो हे स्वामी ।
दरस दिखा दो अब 'मयंक' को भी हे अंतर्यामी ।।
श्री चरणों में शीश झुकाता हूँ मैं बारम्बार ।। गजानन।।

माता शारदे वर दे

माता शारदे वर दे

मन के तिमिर मिटा दे माता, ऐसी ज्योति जलादे माता ।
विषय विकार मिटाने वाली, पावन गंग बहा दे माता ।।
हंस वाहिनी, वीणावादिनि, मन निर्मल कर दे ।
माता शारदे वर दे ।।

तू साक्षात ज्ञान की मूरत, ममता और प्यार की सूरत ।
इस भौतिक नश्वर धरती को, माता तेरी बहुत ज़रूरत ।।
हर विषादमय प्राणी पर निज, वरद हस्त धर दे ।
माता शारदे वर दे ।।

लोभ मोह के बादल छाए, घृणा दंभ हैं पैर जमाए ।
घोर रसातल में जाने से, इसको माता कौन बचाए ।।
खोल ज्ञान के चक्षु, प्रेम के ढाई अक्षर दे ।
माता शारदे वर दे ।।

जो सुर ताल में मेल करादे, ऐसा इक संगीत सुनादे।
तन और मन दोनों झंकृत हो, वीणा पर वो तान बजा दे।
कमल आसिनी सबके हित में, स्वर लहरी भर दे।
माता शारदे वर दे ।।

ऐ वतन

तेरी धरती को शत शत करें हम नमन,
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन ।।
तुझपे कुर्बान करते हैं हम जांनो तन,
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन ।।

मन के मंदिर में होती तेरी आरती,
मस्जिदों में भी होती इबादत तेरी,
तेरी चाहत है हर एक की बंदगी,
बिन तेरे ज़िन्दगी है कहाँ ज़िन्दगी,
जब भी तेरी करूँ अर्चना तो करूँ,
शत्रु के ख़ून से मैं सदा आचमन ।
ऐ वतन, ऐ. वतन, ऐ वतन, ऐ वतन ।।

देवताओं के प्यारे हमारे वतन,
और शहीदों की आँखों के तारे वतन,
जब भी आए शरण ग़म के मारे वतन,
सबने पाए हैं तुझसे सहारे वतन,
तुझसे ज़िन्दा है उपकार का सिलसिला,
तुझ से ज़िन्दा है इन्सानियत का चलन ।
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन ।।

आसमां से ज़मीं तक तेरा नाम है,
तेरे चरणों में रामेश्वरम धाम है,
सत्य की सीख देना तेरा काम है,
सबसे मिलकर रहो तेरा पैग़ाम है,
तेरी सूरत हसीं तेरी सीरत हसीं,
सबके मन को लुभाए तेरा बांकपन।
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।।

तेरी सुबह है हसीं तेरी रातें हसीं,
स्वर्ग से भी है बढ़कर तेरी ये ज़मीं,
तेरे सजदे में झुकते हैं सर हर कहीं,
तेरे जैसा ज़माने में कोई नहीं,
दूर रहता हूँ जब भी मैं तुझसे कभी,
याद में तेरी बहते हैं मेरे नयन,
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।।

जब भी पनपे घृणा की कलुष भावना,
धर्म से नष्ट हो धर्म की साधना,
जबकि हर पल लगे बस लहू में सना,
काम आए न पूजा भजन अर्चना,
जब भी छाया निराशा का काला तिमिर,
तूने आशा की जग को दिखाई किरन।
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन।।

मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए

कहनी है इक बात तुम्हारा ध्यान चाहिए,
मुझको मेरे सपनों का जहान चाहिए।
मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।।

सिक्खों की कहानी उनको याद नहीं है,
नानक जी की बानी उनकों याद नहीं है।
गुरुओं की कुर्बानी उनको याद नहीं है,
जो कहते हैं हमको ख़ालिस्तान चाहिए।
मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।।

ग़द्दारों ने देश को ग़ुलाम किया था,
इसको मीर जाफ़र ने बदनाम किया था।
जयचन्दों ने पृथ्वी को नीलाम किया था,
धरती का फिर से वापस सम्मान चाहिए।
मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।।

झूठे सच्चे वादों में न उलझाओ तुम,
सोने चांदी के नज़ारे न दिखाओ तुम।
लम्बी योजनाओं में न भटकाओ तुम,
मुझको रोटी कपड़ा और मकान चाहिए।
मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।।

मुझको इस अंगरेज़ी से क्या लेना देना है,
अपने देश की भाषा में ही लिखना पढ़ना है।
भाषा के मुद्दे पर लेकिन इतना कहना है,
मुझको हिन्दी वाला हिन्दुस्तान चाहिए।
मुझको हंसता गाता हिन्दुस्तान चाहिए।।

वतन के लिए

सर झुकेगा बस उनके नमन के लिए।
हंसते हंसते मिटे जो वतन के लिए।।

मादरे हिन्द की जब मैं पूजा करूँ।
शत्रु का ख़ून हो आचमन के लिए।।

है हसीं रूप वाला हमारा वतन।
हिन्द मशहूर है बांकपन के लिए।।

दूर होंगे जो अपने वतन से कभी।
दिल तड़पता रहेगा मिलन के लिए।।

शत्रुओं को भी इसने सहारा दिया।
जब भी आया है कोई शरण के लिए।।

चंद धागों की खातिर इसी देश में।
जान देते हैं भाई बहन के लिए।।

जो शहीदों की यादों में बहते रहे।
चाहिए अश्रु ऐसे नयन के लिए।।

सींच के खूँ से गुलशन को महका सकें।
बागवाँ चाहिए वो चमन के लिए।।

ऐ "मयंक" अब ज़रूरत अगर आ पड़े।
जान दे देंगे अपने वतन के लिए।।

"मेरे हिन्दोस्तां"

तेरी धरती को चूमे बुलंद आसमां।
मेरे हिन्दोस्तां मेरे हिन्दोस्तां।।

तेरे माथे पै ताजे हिमाला वतन।
हार तेरे गले को हैं गंगो जमन।।
इक इबादत तेरी हम सभी का चलन।
तेरे दक्खिन में सागर पखारे चरन।।
बस तुझी से है वाबस्ता, हर दास्तां।
मेरे हिन्दोस्तां, मेरे हिन्दोस्तां।।

जो भी आया उसी को सहारा दिया।
अपने दामन का हर सर को साया दिया।।
अम्न का तूने हर दम जलाया दिया।
ज़िन्दगी को नया इक सलीक़ा दिया।।
तेरे दम से जहां में है अम्नोअमां।
मेरे हिन्दोस्तां मेरे हिन्दोस्तां।।

राम नानक कन्हैया का प्यारा है तू।
ख्वाज–ए–चिश्त का भी दुलारा है तू।।
कब किसी से ज़माने में हारा है तू।
और शहीदों की आंखों का तारा है तू।।
तुझ पै कुर्बान करते हैं हम जिस्मो जां।
मेरे हिन्दोस्तां मेरे हिन्दोस्तां।।

तेरी झीलों में चाहत की गहराईयां।
तेरे पर्वत मुहब्बत की उंचाइयां।।
तेरे झरनों में सरगम की रानाइयां।
पुरसुकूँ हैं तेरी मस्त पुरवाइयां।।
तुझसे बढ़के, ज़माने में जन्नत कहां।
मेरे हिन्दोस्तां मेरे हिन्दोस्तां।।

हिन्दु मुस्लिम ईसाई या सिख पारसी।
बस तुझी से है हर एक की ज़िन्दगी।।
मन के मन्दिर में होती तेरी आरती।
मस्जिदों में भी होती इबादत तेरी।।
है "मयंक" आज खुश करके तेरा बयां।
मेरे हिन्दोस्तां मेरे हिन्दोस्तां।।

✣ ✣ ✣

अगर सियासत के चक्कर में दैरो हरम पड़ जाऐंगे।
घर घर इतनी लाशें होंगी कांधे कम पड़ जाऐंगे।।
बादल से शोले बरसेंगे जहर हवाऐं उगलेंगीं।
देख के जिनको मौसम के दीदे नम पड़ जाऐंगे।।

तिरंगे को नमन है

यही अपने बुजुर्गों का कथन है।
कि बढ़के जान से अपना वतन है।।

हवाओं में फसादों का चलन है।
लहू से सुर्ख़रू सारा चमन है।।

ये मस्तक है झुका सजदे में इसके।
हसीं परचम तिरंगे को नमन है।।

ओ जननी जन्मभूमी दूर तुझसे।
दुखों से अश्रुपूरित हर नयन है।।

शहीदों ने जिसे सींचा लहू से।
मिरे भारत तुझे शतशत नमन है।।

बचाऐंगे तुझे हर इक बला से।
ये हर हिन्दोस्तानी का वचन है।।

''मयंक'' अब राहे भारत पर चलेगा।
थकावट है न अब कोई घुटन है।।

गणतंत्र

आओ हम गणतंत्र मनाएँ।
भारत मां के श्री चरणों में मिलजुल कर सब शीश झुकाएँ।।
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।

आज के दिन खुद अपना बनाया, संविधान हमने अपनाया,
जनता पर जनता के द्वारा आज के दिन था शासन आया,
आओ उसकी याद करें और घर घर घी के दीप जलाएं,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।।

आज के दिन जन्मा था जग में एक छत्र गणतंत्र हमारा,
खाई थी कस्में कि ये भारत कभी न हो परतंत्र हमारा,
आओ उन पावन कस्मों को मिलजुल कर के फिर दोहराएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।।

इस दिन को लाने में दी थी लाखों लोगों ने कुर्बानी,
इसकी खातिर खूब लड़ी थी झांसी की रानी मर्दानी,
आओ हम सब फिर दोहराएँ अमर शहीदों की गाथाएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।।

इस विधान को भीमराव ने अपने हाथों स्वयं गढ़ा था,
मरते दम तक दलितों, पिछड़ों के हक में वो खूब लड़ा था,
आओ प्यारे नेताओं के स्वप्नों को साकार बनाएँ,
आओ हम गणतंत्र मनाएँ।।

सियासत की घंटियां

कोई यो व्यवस्था हमें स्वीकार नहीं है।
इंसान को इंसां से जहां प्यार नहीं है।।

कांटों की झाड़ियां हैं मरुस्थल है दूर तक।
कोई दरख्त फूल और फलदार नहीं है।।

मन्दिर में बज रही हैं सियासत की घंटियां।
मस्जिद को इबादत से सरोकार नहीं है।।

ये जिन्दगी किताब है, रखिए सम्हाल कर।
क्यूं फैंकते हो पढ़के, ये अखबार नहीं है।।

कैसे करोगे अपने कबीले की हिफाजत।
जब दिल में जोश हाथ में तलवार नहीं है।।

कहते हैं आप देश के हालात हैं खराब।
हम को भी तो इस बात से इंकार नहीं है।।

कश्ती लगेगी आपकी साहिल पै किस तरह।
काबू में नाखुदाओं के पतवार नहीं है।।

राजनीति की मण्डी

बहुत नशीली और ज़हरीली राजनीति की मण्डी है।
क्रेता जिसका बुद्धू है और विक्रेता पाखण्डी है।।

राशन की दुकानों पर है ताले लगे विवादों के।
चीनी· चावल तेल नहीं है, ढेर लगे हैं वादों के।।
भ्रष्टाचार बैठ गद्दी पर मार रहा बस डंडी है।
बहुत नशीली और ज़हरीली राजनीति की मण्डी है।।

अपनी ढपली ढोल मजीरे, अपने अपने तासे हैं।
देश के दुश्मन शकुनी बन कर फैंक रहे बस पासे हैं।।
लाज देश की लगी दांव पर जनता बनी शिखण्डी है।
बहुत नशीली और ज़हरीली राजनीति की मण्डी है।।

झूठों के हाथों में धन है रेशम मखमल पहने हैं।
चांदी सर से पावों तक, तन पै सोने के गहने हैं।।
सच के तन पै फटी लंगोटी और फटी इक बंडी है।
बहुत नशीली और ज़हरीली राजनीति की मण्डी है।।

धर्म के नाम पै ज़हरीली ये हवा चली है गुलशन में।
मौसम में है घुटन बहुत, बरसात नहीं है सावन में।।
प्यार की भरन नहीं बरसाता मौसम बड़ा घमण्डी है।
बहुत नशीली और ज़हरीली राजनीति की मण्डी है।।

वंदे मातरम्

जांबाज़ों का गान है वंदेमातरम्।
भारत का सम्मान है वंदेमातरम्।।

इससे बढ़ के गीत न कोई दुनिया में।
भारत माँ की आन है वंदेमातरम्।।

यही भजन है यही तिलावत यही सबद।
और धरम ईमान है वंदेमातरम्।।

आओ मिलजुल कर सब गाएं गीत यही।
भारत माँ की शान है वंदेमातरम्।।

सारी दुनिया जाने और सदा माने।
हम सब की पहचान है वंदेमातरम्।।

आज़ादी है जन्न सिद्ध अधिकार "मयंक"।
बस इसका ऐलान है वंदेमातरम्।।

फूल खिलाना ही होगा

गुलशन को गुलज़ार बनाना ही होगा।
तूफानों से इसे बचाना ही होगा।।
सींच के इसको खून पसीने से अपने।
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।।

दोपहरी है तप्त दूर तक शाम नहीं।
दूर दूर काले मेघों का नाम नहीं।।
फिर भी श्रम के स्वेद बिन्दुओं से अपने।
जड़ बीजों को वृक्ष बनाना ही होगा।।
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

हिम्मत हार के माली थककर चूर हुए।।
खरपतवारों से उपवन भरपूर हुए।
नई चेतना से मुर्झाई कलियों को।।
रंग बिरंगे फूल बनाना ही होगा।
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।।

बाग़ में जो ये वीरानी सी छाई है।
कौन है जिसने इसको नज़र लगाई है।।
ऐ मयंक फिर नई बहारों को लाकर।
अपनी बगिया को महकाना ही होगा।।
खुशहाली के फूल खिलाना ही होगा।

ऐ वतन

तज़किरे हैं तिरे अंजुमन अंजुमन।
ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन।।
दीद से तेरी हासिल मसर्रत करूँ।
और शहीदों का ज़िक्रे शहादत करूँ।।
जब कभी भी तेरी मैं इबादत करूँ।
शत्रु के खून से ही करूँ आचमन।।
ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन।

तेरे उत्तर में ऊँचा हिमालय खड़ा।
और दक्षिण में सागर चरण में पड़ा।
ताज में तेरे कश्मीर मोती जड़ा।
तेरा दिल है ज़माने में सबसे बड़ा।
दिल लुभाए तेरा ये हसीं बांकपन।।
ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन।

जो भी आया उसी को सहारा दिया।।
अपने दुश्मन को भी तूने अपना लिया।
सबके सर पे मुहब्बत का साया किया।।
और खुलूसो वफा का जलाया दिया।
प्यार के देवता तुझको शत शत नमन।।
ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन।

नानको कृष्ण गौतम के प्यारे वतन।।
ख्वाजा–ए–चिश्त के औ दुलारे वतन।
सबको तुझसे मिले हैं सहारे वतन।।
ऐ शहीदों की आँखों के तारे वतन।
तुझसे वाबस्ता महरो वफ़ा का चलन।।
ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन ऐ वतन।

जलने न देंगे हम

इस आतंक वाद को पलने ना देंगे हम
दुश्मन तेरी चालों को चलने ना देंगे हम।
पंजाब और कश्मीर को जलने ना देंगे हम।।

जो बलवा करवाए—ख़ालिस्तान के लिए।
जो सिरदर्द बना है—हिन्दुस्तान के लिए।।
मौत बनेंगे ऐसे पाकिस्तान के लिए।
इतना मारेंगे कि सम्भलने ना देंगे हम।।
पंजाब और कश्मीर को जलने ना देंगे हम।।

भारत के शहीदों का सम्मान करेंगे।
अपनी एकता का यूँ ऐलान करेंगे।।
वक्त पड़े तो औलादें कुर्बान करेंगे।
हाथ आए दुश्मन को निकलने ना देंगे हम।।
पंजाब और कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

आ गया है वक्त कि तैयार हो जाऐं।
घर के भेदियों से भी हुशियार हो जाऐं ।।
यूँ कहके, दुश्मन की हद—के पार हो जाऐं।
मक्कारों को फूलने फलने ना देंगे हम।
पंजाब और कश्मीर को जलने ना देंगे हम।।

निर्दोषों की हत्या ही जिसका अरमान है।
वो इंसां नहीं है वो पक्का शैतान है।।
दंगा बलवा करवाना जिसका ईमान है।
ऐ "मयंक" अब दाल उसकी गलने ना देंगे हम।।
पंजाब और कश्मीर को जलने ना देंगे हम।

ये अर्ज़ है इस दीवाने की

मिल जुल के रहना सीखो मत बात करो टकराने की।
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।।

सरहद पर बहने वाला ख़ूँ हर पल देता है आवाज़।
सर पै कफ़न अब बाँध के निकलो भारत माता के जाँबाज़।
कोशिश तुमको करनी है फिर इसकी शान बढ़ाने की।
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।।

हम बंगाली, गुजराती, हैं आसामी, मद्रासी हैं।
लेकिन इन सबसे पहले हम केवल भारतवासी हैं।
खाओ क़सम, एकता की हर दिल में जोत जलाने की।
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।।

कोई भी दुश्मन हो आकर जब हमसे टकराएगा।
अपने मुँह की खाएगा और मिट्टी में मिल जाएगा।
अब तैयारी करो वतन पै अपनी जान लुटाने की।
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।।

घर में आग नहीं लग जाए घर के ही अंगारों से।
सम्हल के रहना अपने घर में छुपे हुए ग़द्दारों से।
कुछ तो अब तरकीब करो नफरत की आग बुझाने की।
ये अर्ज़ है इस दीवाने की।।

ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं

गौतम ख्वाजा की धरती पै अम्न का एक निशान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नही।।

हिन्दू मुस्लिम सिख तो मिलते पर मिलते इंसान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।।

सीमापार के लोगों ने कुछ ऐसी आग लगाई है।
छाया है आतंकवाद भाई का दुश्मन भाई है।।
चौराहों पर माता बहिनों की होती रुसवाई है।
रखवालों ने मिलजुलकर चोरों से घात लगाई है।।
मासूमों की आँखें नम हैं ओठों पर मुस्कान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।।

नेता यहाँ बने व्यापारी राजनीति एक मण्डी है।
क्रेता जिसके बुद्धू हैं और विक्रेता पाखण्डी है।
दौलत की वो लेके तराजू मार रहा बस डंडी है।
टुकुर टुकुर सब जनता देखे बनकर आप शिखण्डी है।।
अपनी कुर्सी छोड़ किसी भी चीज का इनको ध्यान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।।

मन्दिर मस्जिद पड़े हुए हैं राजनीति की चालों में।
झगड़े रोज हुआ करते हैं धर्म और ईमां वालो में।।
मस्जिद में आज़ान नहीं है पूजा नहीं शिवालों में।
मस्जिद मन्दिर दोनों का अस्तित्व है आज सवालों में।।
मस्जिद में अल्लाह नहीं है मंदिर में भगवान नहीं।
ये मेरा हिन्दुस्तान नहीं।।

नई चेतना

नई चेतना का हर दिल में दीप जलाऐंगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाऐंगे,
नई रौशनी लेकर सूरज यहां उजाला देता,
ज्ञान ज्योति से हर इक मन का अंधियारा हर लेता,
दुनिया से अज्ञान भाव को दूर भगाऐंगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाऐंगे,।

कोई भी हो धर्म मगर हम सब हैं हिन्दुस्तानी,
गीता कुरआं कहते हैं, कहती है ये गुरुवानी,
राष्ट्रधर्म को हम अपना ईमान बताऐंगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाऐंगे,।

शीत धूप बरखा में करते मेहनत की हम पूजा,
इससे बढ़कर मन में कोई भाव नहीं है दूजा,
मेहनत करके मिट्‌टी से हम स्वर्ण उगाऐंगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाऐंगे,।

माया मोह पाश में जो भटके है ये संसारी,
मनुष्यता के सच्चाई के हैं ये सब व्यापारी,
अब न यहाँ बाज़ार जिस्म के लगने पाऐंगे,
हम भारत के लाल नया इतिहास बनाऐंगे,।

एक सन्देश

हम सब रेल के श्रमिक हमारा नारा काम करो।
जब तक काम न हो पूरा तुम मत आराम करो।।

उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक ये जाय।
खंड खंड सूबों को जोड़े तब भारत कहलाय।।
तुमको क़सम एकता की मत चक्का जाम करो।
जब तक काम न हो पूरा तुम मत आराम करो।।

सबसे बड़ा तंत्र सरकारी ये भारत की रेल।
बिना श्रमिक सहयोग चलाना नहीं है कोई खेल।।
अपनी भारत रेल का जग में ऊँचा नाम करो।
जब तक काम न हो पूरा तुम मत आराम करो।।

अनुशासन से काम करोगी वांछित फल पाओगे।
वरना काम बिगाड़ोगे, जीवन भर पछताओगे।।
काम अनुशासन में रह कर ही सुबहों शाम करो।
जब तक काम न हो पूरा तुम मत आराम करो।।

काम है पूजा, भजन कहें, ये गीता और कुरान।
काम "मयंक" धर्म है सच्चा काम ही है ईमान।।
इस संदेश को फैला कर दुनियां में आम करो।
जब तक काम न हो पूरा तुम मत आराम करो।।

भीमराव अम्बेडकर

जो थे पिछड़ों का सहारा शोषितों के हमसफर।
थे गरीबों के मसीहा भीमराव अम्बेडकर।।

आप ही ने तो बताया था सभी जन हैं समान।
आप ही थे अहले फ़न, अहले अदब, अहले नज़र।।

आपने अंतर मिटाया जाति का और धर्म का।
आप भटके देश को लेकर के आए राह पर।।

औरतों को हक दिलाया, देके हिन्दू कोड बिल।
अब न भटकेगी कोई भारत की औरत दरबदर।।

बुद्ध मज़हब देके हिन्दू धर्म को झटका दिया।
छोड़कर भटकन वो जिससे आए सच्ची राह पर।।

एकता का पाठ भारत को पढ़ाया आपने।
आप का मशकूर है इस देश का हर इक बशर।।

आप अवतारी पुरूष थे जानते हैं सब "मयंक"।
आइए आ जाइए लेने वतन की फिर ख़बर।।

नेलसन मण्डेला

सुनिये स्वागत गीत नेलसन मण्डेला।
ऐ शोषित के मीत नेलसन मण्डेला।।

जुल्म सहे हंस हंस के ज़ालिम के लेकिन।
हुए नहीं भयभीत नेलसन मण्डेला।।

कहां ज़माना रोक सका, गाते ही रहे।
आज़ादी के गीत नेलसन मण्डेला।।

रूप में तेरे बापू का अवतार हुआ।
ऐसा हुआ प्रतीत नेलसन मण्डेला।।

हमें यक़ीं था इस जंगे आज़ादी में।
होगी तेरी जीत नेलसन मण्डेला।।

तेरी ही मेहनत से गोरे कालों में।
पैदा होगी प्रीत नेलसन मण्डेला।।

आखिर में होती है विजय सच्चाई की।
है ये जग की रीत नेलसन मण्डेला।।

ऐ "मयंक" अब तेरे दम से गूंजेगा।
चाहत का संगीत नेलसन मण्डेला।।

भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान

कहनी है इक बात तुम्हारा ध्यान चाहिए,
जांति पांति से हटकर अगर जहान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

ऊँच–नीच और भेदभाव जिसका आधार हो,
बराबरी के दर्जे से जिसको इन्कार हो।
पिछड़े वर्गों का जिसमें जीना दुश्वार हो,
ऐसी व्यवस्था से गर निदान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

आज ज़रूरत है हमको इक ऐसे राज की,
रक्षा जिसमें होती हो शोषित की लाज की।
राजनीति से बढ़कर हो सेवा समाज की,
दलितों को भी मिलना यदि सम्मान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

भारत को गर टुकड़े होने से बचाना है,
भारत की आज़ादी को यदि अमर बनाना है।
उच्च वर्ग के लोगों को इतना समझाना है,
कुछ स्वार्थों को कर देना कुर्बान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

कसम है तुमको सरहद पै तैनात जवानों की,
खेतों के मज़दूरों की हल–बैल किसानों की।
बात माननी होगी तुमको हम दीवानों की,
दलितों का करना समुचित उत्थान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

आज ज़रूरत है नेता ईमानदार हो,
जिस पै कुर्सी का नशा नहीं सवार हो।
संविधान रचने जैसी क्षमता अपार हो,
बाबा साहब सा नेता महान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

मज़हब जब अपनों पे करता अत्याचार हो,
अपनों को अपनाने से उसको इंकार हो।
भेदभाव जब मज़हब को होता स्वीकार हो,
इस कुव्यवस्था से गर निदान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

हरिजन ही जब हरि के दर्शन कर ना पाएंगे,
मंदिर में जब जायेंगे दुत्कारे जायेंगे।
भीमराव के वचन हमें तब याद दिलायेंगे,
कि "बुद्धं शरणं" का नूतन अभियान चाहिए।
तो भीम के सपनों वाला हिन्दुस्तान चाहिए।।

आओ इसको नमन करो

सारी दुनियां से बढ़कर है ऊँची जिसकी शान,
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करे।।

हर मज़हब के लोग यहाँ पर मिलजुल कर रहते हैं,
मिलजुल कर हँसते गाते हैं, मिलकर ग़म सहते हैं।
जहाँ बाइबिल, गीता, कुरआं सब पाते सम्मान
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

उत्तर में हिमगिरि सा मोती इसके मुकुट जड़ा है,
हिन्द महासागर दक्षिण में जिसके चरण पड़ा है।
जिसकी करे हिमालय रक्षा बन करके दरबान
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

हम सब की रक्षा करते मौलिक अधिकार हमारे,
सब स्वतन्त्र है इस धरती पै जैसे चाँद सितारे।
है अखण्ड गणतंत्र हमारा जिसका एक विधान
आओ इसको नमन करें।।

ये वसुधा है कुटुम्ब एक अपना विश्वास यही है,
सब को इसने अपनाया कहता इतिहास यही है।
सत्य अहिंसा देश प्रेम है जिसके लक्ष्य महान,
आओ इसको नमन करें।।

यहाँ सिक्ख–हिन्दू मज़ार पै जाकर शीश झुकाते,
मुस्लिम और ईसाई दीवाली का पर्व मनाते।
जहाँ करे हिन्दू की रक्षा सिक्खों की किरपान,
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

त्यागेंगे इंगिलश भाषा को है अपना मंसूबा,
हिन्दी भाषा बहन हमारी, उर्दू है महबूबा।
मुस्लिम जहाँ मनाते होली और हिन्दू रमज़ान,
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

जिसकी खातिर बापू जी ने हंसकर गोली खाई,
भगत, चन्द्रशेखर, सुभाष ने अपनी जान गंवाई।
जिसकी खातिर किया असंख्यों ने हंसकर बलिदान,
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

भिन्न भिन्न हैं रहन सहन और भिन्न भिन्न भाषाऐं,
मगर एक हो करके हम सब इसको शीश झुकाऐं।
समझा जाता जहां एकता को सच्चा ईमान,
वो है मेरा हिन्दुस्तान मेरे सपनों का जहान।
आओ इसको नमन करें।।

मेहनत कश इंसान

मेहनत कश इंसान बनो तुम, मेहनत कश इंसान बनो।
भारत की पहचान बनो तुम, भारत की पहचान बनो,
हिन्द के ऐ मजदूर किसानों, अपनी ताकत पहचानो,
भारत माँ की संतानों ऐ, वीर सिपाही दीवानों,
शांति दूत बन कर तुम जग में भारत माँ की शान बनो।
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो।।
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो,

सीमाओं के पहरे दारों ऐ भारत माँ के प्यारों,
मिलजुल कर अपने जानो तन देश की खातिर तुम बारो,
तन मन धन सब कुर्बा करके भारत का सम्मान बनो।
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो।।
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो,

राम कृष्ण की इस धरती की तुमको लाज बचानी है,
ख़्वाजा और नानक की शिक्षा घर घर तक पहुंचानी है,
राष्ट्रधर्म को ठुकराकर तुम मत इतने नादान बनो।
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो।।
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो,

तुमको मेहनत से निज खेतों में सोना उपजाना है,
औद्योगिक उत्पादन करके देश को स्वर्ग बनाना है,
ज्ञान जगत को बाटे हरदम तुम ऐसे विद्वान बनो।
मेहनत कश इंसान बनो तुम मेहनत कश इंसान बनो।।
भारत की पहचान बनो तुम भारत की पहचान बनो,

‘दिन सुहाना ईद का’

आ गया फिर दिन सुहाना ईद का।
सारा आलम है दिवाना ईद का।।

रस्म है दस्तूर भी है, आ भी जा।
बाम पर लेकर बहाना ईद का।।

देके कुरआं माहे रमज़ां चल दिए।
देके ये तोहफा सुहाना ईद का।।

दुश्मनी को दोस्ती में ले बदल।
देख मत मौका गंवाना ईद का।।

सिख, इसाई, हिन्दुओं, मुस्लिम ही क्या।
है यहां आशिक ज़माना ईद का।।

जंग से देगा ज़माने को निजात।
इस तरह मिलना मिलाना ईद का।।

ईद सबको हो मुबारक–ऐ "मयंक"।
जश्न ये मत भूल जाना ईद का।।

परिवार नियोजन

भूलो सारे नारों को और, याद रखो बस नारे दो।
दो बच्चे आधार खुशी का, हम दो और हमारे दो।।

इक बेटा इक बेटी हो, इससे बढ़के सौगात नहीं।
दो बेटी हों या दो बेटे तो भी कोई बात नहीं।।
ये दो है चेहरे पर जैसे, हों नैना कजरारे दो।
दो बच्चे आधार खुशी का, हम दो और हमारे दो।।

खरपतवार उगाने से बेहतर है पेड़ लगाएँ दो।
अच्छे फल और फूल सदा दें और सर को दें साए वो।।
घर की छोटी सी बगिया में फूल लगें बस प्यारे दो।
दो बच्चे आधार खुशी का हम दो और हमारे दो।।

दो से ज्यादा बच्चे हों तो जीवन नर्क बनाऐंगे।
दो होंगे तो जीवन नैया सुख से पार लगाऐंगे।।
आऐगा तूफ़ान तो बन जाऐंगे यहीं किनारे दो।
दो बच्चे आधार खुशी का हम दो और हमारे दो।।

अपने घर संसार को हर दम खुशियों से आबाद रखें।
लेकिन इसके लिए सदा परिवार नियोजन याद रखें।।
घर संसार "मयंक" बसाएँ जब भी नए कुंवारे दो।
दो बच्चे आधार खुशी का, हम दो और हमारे दो।।

एक हो जाओ

यही है वक्त की आवाज आओ एक हो जाओ।
मुहब्बत प्यार के तुम गीत गाओ एक हो जाओ।।

वतन पर मिट गए ऐसे शहीदों की कसम तुमको।
तुम उनकी याद में आंसू बहाओ एक हो जाओ।।

तुम्हें कश्मीर को आतंक से आज़ाद करना है।
क़सम तुम आज ये खाओ, कि आओ एक हो जाओ।।

न मंदिर को गिराऐंगे न मस्जिद को गिराऐंगे।
इसी नारे को मिल जुल के लगाओ एक हो जाओ।।

जहां देखो बिखरने के नज़र आसार आते हैं।
अभी भी वक़्त है मिल जुल के आओ एक हो जाओ।।

ये कहना है किसानों से व सीमा पर जवानों से।
कि मिलजुल के तिरंगे को उठाओ एक हो जाओ।।

ये भारत एक है कश्मीर से कन्या कुमारी तक।
चलो मिल जुल दुनिया को बताओ, एक हो जाओ।।

मंहगाई

हर दिन राशन की क़तार की बढ़ जाती लम्बाई है,
ये कैसी महंगाई है।।
थैले भर नोटों में बस मुट्ठी भर मक्का आई है,
ये कैसी महंगाई है।।

साले जी परदेस से आऐ सस्ता सोना लाए हैं,
लेकिन धनअभाव में हम कब गहने बनवा पाए हैं,
सोने की कीमत से बढ़कर गहनों की गढ़वाई है,
ये कैसी महंगाई है।।

है अभाव का तन लम्बा और सुविधाओं का बौना है,
धन अभाव में धनवंती का हो नहीं पाया गौना है,
शादी तो हो गई मिलन की बज न सकी शहनाई है,
ये कैसी महंगाई है।।

आज क़ीमतें आसमान को छूने को भी तत्पर हैं,
इसीलिये तो दूर बहुत ही रोटी, कपड़ा और घर है,
चहुँ दिस काले धंधे और सट्टे ने धाक जमाई है,
ये कैसी महँगाई है।।

बढ़े भाव तो दियासलाई कैरोसीन नहीं मिलते,
इसीलिए तो बहुओं के पहले से जिस्म नहीं जलते
इस महँगाई में हमने बस ये ,अच्छाई पाई है।
ये कैसी महंगाई है।।

दिन प्रतिदिन रूपये का तो अवमूल्यन होता जाता है,
भीख में पाँच रूपये लेने से भिखमंगा शर्माता है,
दान अगर पैसों में दें तो हो जाती रुसवाई है,
ये कैसी महंगाई है।।

एक ही धंधे वाले से दूजा पैसा कब लेता था,
पहले काम वो सह व्यवसाई का यूं ही कर देता था,
केवट अब दूजे केवट से ले लेता उतराई है,
ये कैसी महंगाई है।।

✤ ✤ ✤

ग़म ज़रूरी सही ज़िन्दगी के लिए।
ग़म की दौलत नहीं हर किसी के लिए।।

हर तरफ़ जब अंधेरों का साम्राज्य हो।
दिल जलाऐंगे हम रौशनी के लिए।।

अपनी आखों में सूरज छुपाए हुए।
हम भटकते रहे रौशनी के लिए।।

ऐ "मयंक" अब तिरे सजदे होंगे कुबूल।
सर झुका यार की बन्दगी के लिए।।

ऐसी क्या मजबूरी है

रब का घर मिसमार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है।
बरबादी से प्यार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है।।

खेल रहे हैं खूं की होली और मज़हब के नाम पै हम।
नफ़रत का संचार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

अहले सियासत मेरे वतन में दैरो–हरम की लेकर आड़।
मज़हब का व्यापार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

राम के भक्त रहीम के बंदे, गलियों और चौराहों पर।
लाशों का अम्बार कर रहे, ऐसी क्या मजबूरी है।।

कर्बल और महाभारत में जीत के भी हारे हम क्यूं ?
इस पर नहीं विचार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

हर मज़हब का एक सार है इस दुनिया का मालिक एक।
फिर हम क्यों तक़रार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

इक दूजे का खूं करने को संगे सियासत पर घिसकर।
क्यूं पैनी तलवार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

रोज़े क़यामत से पहले ही, आज 'मयंक' कयामत का।
हम सब हैं दीदार कर रहे ऐसी क्या मजबूरी है।।

एड्स

सावधान सावधान सावधान सावधान,
मुंह को बाए खड़ा हुआ है एड्स का ये शैतान,
अब भी वक़्त है खुद को बचा ले इससे तू इंसान।
सावधान सावधान सावधान सावधान।।

लाइलाज़, पीड़ा दायक है एड्स की ये बीमारी,
जिसको भी लग जाए नहीं छोड़े है ये हत्यारी,
आज एड्स से ग्रस्त हैं दुनिया के लाखों नर नारी।
इसके ख़ौफ से सहमी सहमी है ये दुनिया सारी,
जान बूझकर तो मत बन तू इस दर्जा अनजान।
सावधान सावधान सावधान सावधान।।

यूं तो एड्स को लेकर फैलीं कितनी ही अफ़वाहें,
सच्चा ज्ञान ज़रूरी है गर इससे बचना चाहें,
हो जाए तो बंद करे खुशियों की सारी राहें,
रिश्ता जोड़ लिया करती हैं पीड़ाऐं और आहें,
काम दवा नहीं करती जीवन होता नर्क समान।
सावधान सावधान सावधान सावधान।।

इससे बचना है तो थोड़ा खुद पै संयम रखिए,
असुरक्षित हो यौन क्रिया तो उससे बचकर रहिए,
रक्तदान से पहले अपना पूर्ण परीक्षण करिए,
इन्जेक्शन मैं सदा नई सुइयाँ ही आप बरतिए,
एड्स से बचना है तो रखिए इन बातों का ध्यान।
सावधान सावधान सावधान सावधान।।

आओ एड्स के बारे में दुनिया को हम बतलाएँ,
बीमारी ये नहीं छूत की ये सबको समझाएँ,
पास फटकने नहीं इसे दें जीवन सफल बनाऐं,
इसे मिटाकर विरुद्ध इसके इक अभियान चलाऐं,
इससे बचने में है भलाई, जिसका नहीं निदान।
सावधान सावधान सावधान सावधान।।

✤ ✤ ✤

थीं हवाऐं तेज़ कितनी मुझको अंदाज़ा न था।
क्यूं कि जिस कमरे में था मैं, उसमें दरवाज़ा न था।।

ख़ून दामन पर न था हां, दर्द था वे बेइन्तिहा।
क्यूं कि दिल का ज़ख़्म गहरा था गमर ताज़ा न था।।

वक़्त बदला तो सभी साथी बिछुड़ कर रह गए।
साथ तुम भी छोड़ दोगे इसका अंदाज़ा न था।।

नटवर लाल

नटवर लाल हमारे कान्हा।
दीन दयाल हमारे कान्हा।।

मुरली धर पीतम्बर धारी।
मोर मुकुट वारे बनवारी।।
तुमको पूजें सब नर नारी।
लीला बरन न जाए तुम्हारी।।
हर अधर्म और हर असत्य के।
है बस काल हमारे कान्हा।।
दीन दयाल हमारे कान्हा।

जब जब भीड़ पड़ी भक्तों पर।।
दिया सहारा तुमने आ कर।
तुम्ही अनन्त अनादि अगोचर।।
बलदाऊ भैया के सहोदर।
रास में सबको नाच नचावैं।।
भक्त कृपाल हमारे कान्हा।
दीन दयाल हमारे कान्हा।।

बृजवासिन संग खेलें होरी।
लिए पिचकारी और कमोरी।।
सखियन संग करें बरजोरी।
प्यार सो रंग दई राधा गोरी।।
हंस हंस कर सबके मुख मलते।
रंग गुलाल हमारे कान्हा।।
दीन दयाल हमारे कान्हा।

गीता का उपदेश सुनाया।।
पाण्डव सुत का मोह मिटाया।
पांचाली का चीर बढ़ाया।।
रण में रूप विराट दिखाया।
कर्म का मार्ग दिखा कर काटें।।
माया जाल हमारे कान्हा।
दीन दयाल हमारे कान्हा।।

जनम लेत ही खुल गयो तारो।।
तुमहि पूतना बध करि डारो।
उंगली पै गोबरधन धारो।।
राक्षस मामा कंस पछारो।
बचपन में योद्धाओं जैसे।।
करत कमाल हमारे कान्हा।
दीन दयाल हमारे कान्हा।।

मथुराधीष द्वारिका स्वामी।
हे अवतारी अंतरयामी।।
सारा जग तुम्हरो अनुगामी।
शरण मयंक पड़ा खल कामी।।
छोड़ के तुमको किसे बताऐं।
अपना हाल हमारे कान्हा।।
दीन दयाल हमारे कान्हा।

❖ ❖ ❖

नहीं आना है मत आओ, बहाना क्यों बनाते हो।
मुझे बेसब्र पागल और दिवाना क्यों बनाते हो।।
जहाँ में और भी तो अहले दिल अहले जिगर होंगे।
मुझे ही अपनी नज़रों का निशाना क्यों बनाते हो।

माँ शेरांवाली

ऐ दुरगे माँ शेरांवाली।
तेरे दर पै जो कोई आया, गया न लेकर झोली खाली।

पाए जिसने तेरे दरशन, उसका धन्य हुआ है जीवन।
जिस घर में हो तेरा पूजन, खुशियों से भर जाए आंगन।
भवसागर से तर जाता वो जिसने तेरे किरपा पाली।
ऐ दुरगे माँ शेरांवाली।

द्वार तुम्हारे जो कोई आता अपना मनवांछित फल पाता।
तुम्हरा आदर करते माता, बृह्मा, विष्णु, महेश विधाता।
रूप अनेक हैं तेरे दुर्गा, अम्बे, वैष्णो देवी, काली।
ऐ दुरगे माँ शेरांवाली।

दिल करता है मैं भी आऊँ द्वार पै तेरे शीश झुकाऊँ।
तेरी जय जयकार से माता अपना हर दुख दर्द मिटाऊँ।
तेरी करूं अर्चना पूजा जो न कभी जाए माँ खाली।
ऐ दुरगे माँ शेरांवाली।

माता जो तेरा गुण गावे, घर में तेरे भजन करावे।
विधि विधान से तुमको ध्यावे, तेरी जोत अखण्ड जलावे।
काली रात न आवै उसके घर में होती रोज दिवाली।
ऐ दुरगे माँ शेरांवाली।

ओउम नमः शिवाय

ओउम नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय,

दुख जीवन में पास न आए,
सुख में बोलो अलख जगाए,
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय।।

रोज़ भभूत लगाते अंग,
माथे पर है शोभित गंग,
बम बम भोले पीकर भंग,
विचरें पारवती के संग,
बोलो अपने ह्रदय बसाय,
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय।।

जग के स्वामी दीनदयाल,
चन्द्र बिराजे तुम्हरे भाल,
गले पड़ी सरपों की माल,
रूप सलोना भृकुटि विशाल,
जो देखे मस्ती में गाए,
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय।।

देव कोई जब हो न सहाय,
तू जो भव सागर फंस जाए,
भोले बाबा को तू ध्याय,
तेरा हर इक दुख मिट जाए
गाता जा सब कुछ विसराय,
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय।।

करते तुम परवत पर वास,
देवासुर गण तुम्हरे दास,
जो करते तुम पर विश्वास,
दुख ना आते उनके पास,
केवल एक ही मंत्र सुहाय
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय

पियें हलाहल जब शंकर,
ताण्डव करते परवत पर,
सुर दें देवासुर किन्नर,
डमरू बोले डमर डमर,
"मयंक" शिव शंकर गुन गाय
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय।।

भजन

मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया।
सागर में मैं हूँ और भंवर में मेरी नैया।।

जीवन के अंधेरे में मेरे कर दे उजाला।
दे दरस हमें अपने कभी नंद के लाला।।
वंसी की मधुर तान बजा वंसी बजैया।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया।।

गीता में दिया था जो वचन आके निभादे।
भटकी हुई दुनिया को ज़रा राह दिखादे।।
अरदास मेरी सुन भी ले बलराम के भैया।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया।।

सखियों के संग बालापन में रास रचायो।
विपदा में पड़ी द्रोपदी का चीर बढ़ायो।।
ऐ मोर मुकुट वारे ओ गैयों के चरैया।
मुझपै भी करम करना जरा कृष्ण कन्हैया।।

अवतार लिया आपने मामा की जेल में।
मारा था कंस आपने बस खेल खेल में।।
सोलह कला पृवीन ओ काली के नथैया।
मुझ पर भी करम करना जरा कृष्ण कन्हैया।।

ईद मुबारक

ग़म को जज़्बा भुलाओ कि ईद आ गई।
फिर हंसो और हंसाओ कि ईद आ गई।।

हाथ से हाथ सीने से सीने मिले।
दिल से दिल भी मिलाओ कि ईद आ गई।।

बाम पर आज वो भी मिलेंगे ज़रूर।
लो नसीब आज़माओ कि ईद आ गई।।

कुफ़्र की तीरगी दिल से मिट जाऐगी।
शम्मे हक़ जगमगाओ कि ईद आ गई।।

मुस्लिमों, हिन्दुओं, सिक्ख ईसाइयों।
अब तो शिकवे मिटाओ कि ईद आ गई।।

हम्द नातो–सलाम आज पढ़कर 'मयंक'।
मनक़बत गुनगुनाओ कि ईद आ गई।।

✤ ✤ ✤

रविश कलियों की फूलों का चलन अच्छा नहीं लगता।
न जाने क्यूं हमें अब ये चमन अच्छा नहीं लगता।।
ये कैसा ज़हर फैला चारसू फिरका परस्ती का।
कि अब इक हम वतन को हम वतन अच्छा नहीं लगता।।

जवाहर लाल

जवाहर लाल नेहरू इस वतन के पासबां थे तुम।
कि इस आज़ादिए भारत के मीरे कारवां थे तुम।।
जहां तक़रीर की तुमने, वहीं दुश्मन दहल उट्ठा।
कि अंग्रेज़ों के हक़ में इस क़दर शोला बयां थे तुम।।
जिसे देकर के खूं अपना खिलाए फूल खुशबू के।
उसी बाग़े वतन के ऐ जवाहर बागबां थे तुम।।
गुलामी में तड़पते हिन्द को आज़ाद करवाया।
अरे एं हिन्द के प्यारे ग़ज़ब के मेहरबाँ थे तुम।।
तुम्हीं ने तो दिया दुनिया को पैग़ाम अम्न का नेहरू।
इसी ख़ातिर तो कहते हैं सभी, फ़ख़्रे जहां थे तुम।।
तुम्हीं थे पासबां मज़दूर, बेकस और किसानों के।
ग़रीबों के मसीहा बेजुबानों की जुबां थे तुम।।
तुम्हीं थे लाल, मोती के, जवाहर बन के जो चमके।
तुम्हीं थे लाडले बापू के और भारत की जां थे तुम।।
कि जिसकी रहबरी से इज़्ज़तो शोहरत मिली सबको।
यक़ीनन क़ाफ़िलाए हिन्द के वो निगहबां थे तुम।।
तुम्हारी मेहरबानी से चढ़े परवान अदब और फ़न।
अदब फ़न शायरी और शायरों के कद्रदां थे तुम।।
सिखाया जिसने दुनिया को अहिंसा और अमन का पाठ।
खुलूसो प्यार यकज़हती के इक ऐसे निशां थे तुम।।
बसे हो आज भी बच्चों के दिल में तुम चचा बनकर।
हमारी जिन्दगानी के भी नेहरू पासबां थे तुम।।

राही

राही चलते जाना होगा,
जिसको मंज़िल की चाहत है,
जिसको मक़्सद से उल्फ़त है,
उसको अपने साथ में लेकर,
क़दम से क़दम मिलाना होगा,
राही चलते जाना होगा।

राह में गर आ जाए पत्थर,
दूर हटाओ देकर ठोकर,
तकलीफ़ें कितनी भी आऐं,
ग़म सह कर मुस्काना होगा,
राही चलते जाना होगा।

जिसमें चलने की हिम्मत है,
जिसकी फ़ितरत में मेहनत है,
काम क्रोध मद लोभ मोह से,
वो अक्सर बेगाना होगा,
राही चलते जाना होगा।

इक उंगली कमज़ोर है मानो,
मुट्ठी की ताक़त पहचानो,
भाव एकता का मन में ले,
आगे क़दम बढ़ाना होगा,
राही चलते जाना होगा।

नज़ारा होली का

कितना सुन्दर लगे नज़ारा होली का।
सतरंगी त्यौहार ये प्यारा होली का।।

प्यार की बौछारों से तनमन भीगे हैं।
है वो पावन पर्व हमारा होली का।।

रंगों का धर्मों–ईमान नहीं होता।
चाहत का बस खेल है सारा होली का।।

झूम झूम उठता है देखो मस्ती में।
जो भी सुनता है जयकारा होली का।।

जो होली सो होली आगे की सोचें।
समझ सके तो समझ इशारा होली का।।

जली होलिका सब अंधियारे दूर भगे।
फैला है चहुँदिश उजियारा होली का।।

नेकी की हो जीत, बदी हारे हरदम।
जग में ज़ाहिर है ये नारा होली का।।

घूंघट में हंस हंस भाभी बेहाल हुई।
देवर ने ठुमका जब मारा होली का।।

दोहे

बरखा में चौमास ने छेड़ा मेघ मल्हार।
धानी चूनर ओढ़ कर इतरा रही बहार।।

धानी जाको घाघरो, पीरो चूनर रंग।
झूमे सरसों खेत में मन में लिए उमंग।।

गरवा मिलकर मेघ से इठला रही बयार।
आसमान से हो रही मुतियन की बौछार।।

भांति भांति के स्वर लिए मुरली में हैं छेद।
कौन मधुर, कटु कौन है मुश्किल करना भेद।।

सागर पी से भेंट को खौवै नदी करार।
तोड़ किनारे रस्म के बनी बेहयानार।।

धीरे धीरे

यूँ झुकाना नयन धीरे–धीरे ।
मोह लेता है मन धीरे–धीरे ।।

सांझ होती है झुकते हैं जब भी ।
आपके ये नयन धीरे–धीरे ।।

संग रहकर हमारे है बदला ।
आपका आचरण धीरे–धीरे ।।

दूर रहकर भी अक्सर है आता ।
याद मुझको वतन धीरे–धीरे ।।

चांद निकला जो तुमने उठाया ।
मुख पड़ा आवरण धीरे–धीरे ।।

उम्र सिखला ही देगी तुम्हें भी ।
प्यार का हर चलन धीरे–धीरे ।।

तुमने हंसकर जो देखा चमन में ।
खिल उठा हर सुमन धीरे–धीरे ।।

ऐ "मयंक" आयेगा आते–आते ।
प्यार का व्याकरण धीरे–धीरे ।।

ये गीत मेरे बंजारे हैं

जाने किसकी धुन में निसदिन फिरते मारे मारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं, ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

प्रीतम की पाती को जब बिरही मन तरसा करता है।
जेष्ठ माह में नैनों से जब सावन बरसा करता है।।
कालिदास के मेघदूत सम बन जाते हरकारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

चाकू छुरियाँ नहीं बेचते, मुफ्त बाँटते अपनापन।
दुख की गर्मी के मौसम में छा जाते बन के सावन।।
शीतल मंद पवन के झोंके और नदिया के धारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

देश प्रेम से ओत प्रोत हैं भक्तिभाव भी उपजाते।
साधू और कलंदर मेरे गीतों को अक्सर गाते।।
मृतकों में भी जान फूंक दे ये ऐसे अंगारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

ढूँढ रहे हैं जीवन की सरगम में कोई गीत नया।
और गीतों को देने वाला साज़ कोई मनमीत नया।।
आशा और निराशा के हाथों में दो इक्तारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

रूप को देते हैं प्रीतम का आमंत्रण मनुहार भरा।
आमंत्रण ऐसा जिसमें हो संदेसा बस प्यार भरा।।
सजनी के ओठों पै जाकर बन जाते नखरारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

जो खुश हैं उनके ओठों पे जाकर ये खुश होते हैं।
भूखे और नंगों के साथी बनकर आँख भिगोते हैं।।
उनसे नेह अधिक रखते हैं जो दुखदर्द के मारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

वर्तमान जब आने वाले कल से डरने लगता है।
अंतःकरण निराशा के तम से जब भरने लगता है।।
आशा का उजियारा देते बन के चाँद सितारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

इनमें जवानी की मस्ती है और बचपन की निश्छलता।
वृद्धावस्था की मयंक मिलती है इनमें व्याकुलता।।
फूलों जैसे विकसित हैं कलियों की भाँति कुंवारे हैं।
ये गीत मेरे बंजारे हैं।।

❖ ❖ ❖

तंग आकर मौत को भी खुदकुशी करनी पड़े।
जिन्दगानी को हसीं इतना बना देते हैं हम।।

सौदंर्य के चितेरे

हमने दिल में किए बसेरे हैं।
हमतो सौन्दर्य के चितेरे हैं।।

हम लगा देंगे जान की बाज़ी।
हमसे किस वास्ते ये नाराज़ी।।
हमसे अति दूर ग़म के डेरे हैं।
हमतो सौन्दर्य के चितेरे हैं।।

तुमसे रितुएं हैं तुमसे मौसम हैं।
तुम जहां हो वहीं पै तो हम हैं।।
तुमसे ये सांझ है, सवेरे हैं।
हमतो सौन्दर्य के चितेरे हैं।।

तुम तो हीरा हो सब नगीनों में।
सुर तुम्हारे ह्रदय की बीनों में।।
तुम हो नागन तो हम सपेरे हैं।
हमतो सौन्दर्य के चितेरे हैं।।

जो मोहब्बत से दूर रहते हैं।
दास्तां नफ़रतों की कहते हैं।।
वो तुम्हारे हैं और न मेरे हैं।
हमतो सौन्दर्य के चितेरे हैं।।

बरखारानी

बरखा रानी, ओ बरखा रानी।
तूने आकर पहनाई धरती को चूनर धानी।।
बरखा रानी, ओ बरखा रानी।

तेरे आते ही मौसम की छटा हुई रंगीली।।
धूप आकर अपने यौवन में हो गई है चटकीली।
सोंधी सोंधी खुशबू देती धरती गीली गीली।।
फल देती अमवा की डाली होने लगी लचीली।
पलक झपकते सारी कुदरत हो गई पानी पानी।।
बरखा रानी, ओ बरखा रानी।

हुक्के का आनन्द उठाते बोले बूढ़े कक्का।।
बरखा ऋतु में क्यों उदास है बोल रे जुम्मन सक्का।
जुम्मन बोला काका सोच के लागे दिल को धक्का।।
बिन छिड़काव न देगा कोई ज्वार, बाजरा, मक्का।
बिन पैसे के बिदा करूँ कैसे बिटिया रमजानी।।
बरखा रानी ओ बरखा रानी।

सोचके हल लेकर के निकले घर से फगुनी ताऊ।।
चौमासे में घर लौटेगा शहर से पूत कमाऊ।
मेरे साथ में काटेगा वो आकर फ़सल पकाऊ।।
वही उखाड़ेगा खेतों से खर पतवार और झाऊ।
अब न करूँगा शहर भेजने की उसको नादानी।।
बरखा रानी, ओ बरखा रानी।।

चलो मैखाने में

होने को है शाम चलो मैख़ाने में।
छलकेंगे अब जाम चलो मैख़ाने में।।

जो भी होना है वो देखा जाऐगा।
सोचो मत अंजाम चलो मैख़ाने में।।

पीकर लग़ज़िश आती है तो आने दो।
साक़ी लेगा थाम चलो मैख़ाने में।।

आज की शाम चलो हम तुम लिख देते हैं।
मैख़ाने के नाम चलो मैख़ाने में।।

मौसम और बहारें लेकर आये हैं
मस्ती का पैग़ाम चलो मैखाने में।।

रंजो गम के मारों को मिल जायेगा।
ऐ "मयंक" आराम चलो मैखाने में।।

याद आओगे तुम

दूर जाकर भी कब दूर जाओगे तुम।
याद आओगे तुम, याद आओगे तुम।।

दूर हमसे मिलेंगे तुम्हारे तुम्हें।
और लाखों मिलेंगे सहारे तुम्हें।।
है मगर ये यक़ीं याद करके हमें।
अश्क तन्हाइयों में बहाओगे तुम।।
याद आओगे तुम याद आओगे तुम।

एक अर्से तलक साथ हम तुम रहे।।
हमने खुशियाँ–ओ–ग़म साथ मिलकर सहे।।
हमसे मुमकिन नहीं है भुलाना तो फिर।
चाह कर भी कहां भूल पाओगे तुम।।
याद आओगे तुम याद आओगे तुम।

तन की दूरी है ये मन की दूरी नहीं।।
हम न मिल पाऐं ऐसा ज़रूरी नहीं।
हम मिलेंगे यकीनन कि जब भी कभी।।
मेरी बस्ती में तशरीफ़ लाओगे तुम।
याद आओगे तुम, याद आओगे तुम।।

लतीफ़ा

इक लतीफ़ा लब पै लाकर देखिए।
ज़िन्दगी को मुस्करा कर देखिए।।

पढ़ लिया है आपने इतिहास अब।
इस सदी का गीत गा कर देखिए।।

खिल उठेगी बाग़ की हर इक कली।
आप थोड़ा खिलखिला कर देखिए।।

खुद ब खुद मिट जाऐगा हर इक तिमिर।
आप अपना दिल जलाकर देखिए।।

जान दे देंगे तुम्हारे वास्ते।
जब भी चाहे आज़माकर देखिए।।

आग, बिजली, मेघ, जल सब कुछ तो है।
मेरी आखों में तो आकर देखिए।।

प्यार में कुछ कर गुजरना है "मयंक"।
तो ज़रा हस्ती मिटा कर देखिए।।

मुस्कराना चाहिए

ज़हर को पीकर पचाना चाहिए।
चोट खाकर मुस्कराना चाहिए।।

आंधियां जिसकी हिफ़ाजत खुद करें।
दीप इक ऐसा जलाना चाहिए।।

दुश्मनों की आदतें मालूम हैं।
दोस्तों को आज़माना चाहिए।।

राह में आ जाए गर पत्थर कोई।
उसको ठोकर से हटाना चाहिए।।

एक पल काफी है नफ़रत के लिए।
प्यार करने को ज़माना चाहिए।।

बढ़ती आबादी के इस तूफ़ान में।
सर छुपाने को ठिकाना चाहिए।।

कर्ज़ ले कर भूलना अच्छा नहीं।
कर्ज देकर भूल जाना चाहिए।।

घिर रहे हैं ग़म के बादल ऐ "मयंक"।
अब तो कुछ हंसना हंसाना चाहिए।।

माँझी गीत

ओ माँझी चल, ओ माझी चल।
नदिया की धारा की तरह बहता चल प्रतिपल।।
ओ माँझी चल, ओ माँझी चल।

नहीं छांव है, दूर गांव है, रुकना तेरा नहीं काम है।।
मीत बना ले तू नदिया में होती उथल पुथल।
ओ माँझी चल, ओ माँझी चल।।

दूर सितारा बन के सहारा तुझे बताए दूर किनारा।
आने दे तूफान मचाता लहरों में हलचल।।
ओ माँझी चल, ओ माँझी चल।

सागर गहरा, सघन अंधेरा, नैया छोटी दूर सवेरा।।
हार न हिम्मत बना परिश्रम को अपना सम्बल।
ओ माँझी चल, ओ माँझी चल।।

मौन किनारे बांह पसारे कहते हैं आजा आजा रे।
लक्ष्य न होने देना अपनी आंखों से ओझल।।
ओ माँझी चल, ओ माँझी चल।।

हिन्दी को अपनाओ

हिन्दी को अपनाओ, आओ हिन्दी को अपनाओ।
हिन्दी सारे देश की भाषा, मत इसको बिसराओ।।
तुम हिन्दी को अपनाओ।।

हिन्दी देवनागरी भाषा देवों की है वाणी,
हिन्दी है साक्षात सरस्वति, हिन्दी है कल्याणी।
सीख के हिन्दी, धरम ग्रंथ पढ़, जीवन सफल बनाओ।
तुम हिन्दी को अपनाओ।।

हिन्दी भारत के कौने–कौने में बोली जाती,
एक छत्र भारत की सचाई को साकार बनाती।
सीख के हिन्दी को सच्चे भारतवासी कहलाओगे।
तुम हिन्दी को अपनाओ।।

राजकाज में हिन्दी लाकर दूर करो अंगरेज़ी,
इस पवित्र शुभ कार्य में तुमको लानी होगी तेज़ी।
हिन्दी लाकर दास भावना से छुटकारा पाओ।
तुम हिन्दी को अपनाओ।।

हिन्दी में लिक्खेंगे नोटिंग पत्राचार करेंगे,
कोई भी कठिनाई हो हिन्दी को प्यार करेंगे।
गांधी और विनोबा का सपना साकार बनाओ।
तुम हिन्दी को अपनाओ।।

गीत

तुम्हीं मेरी चाहत तुम्हीं आशिक़ी हो।
तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो।।
तुम्ही मेरी पूजा तुम्ही बंदगी हो।
तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो।।

हमारी मुहब्बत से रौशन जहां हैं।
हमीं से मुनव्वर ज़मीं आसमां हैं।।
मैं चंदा हूँ और तुम मेरी चांदनी हो।
तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो।।

कहे चाहे कुछ भी ये सारा ज़माना।
न छोड़ेंगे हम अपना वादा निभाना।।
तुम्हीं दिल की धड़कन तुम्हीं ज़िन्दगी हो।
तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो।।

मेरे लब पै आया हुआ गीत हो तुम।
जो छेड़ा है दिल ने वो संगीत हो तुम।।
मैं सरगम हूँ और तुम मेरी रागिनी हो।
तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो, तुम्हीं हो।।

लड़कियाँ

धन की ख़ातिर ये कमसिन जवां लड़कियां।
रोज़ होती हैं राख और धुआं लड़कियां।।

शीश–ए–जिस्म और शीशए दिल लिए।
पत्थरों पर हैं क्यूं महरबां लड़कियां।।

रोज सहती हैं अपनों के जुल्मों सितम।
फिर भी कब खोलती हैं जुबां लड़कियां।।

नस्ल की नस्ल बरबाद हो जाऐगी।
हो गई जो कहीं बदगुमां लड़कियां।।

बात ही बात में क़त्ल करती हैं ये।
बिन लिए कोई तीरों कमां लड़कियां।।

रोज जी जान से सबकी ख़िदमत करें।
फिर भी खाती हैं क्यूं गालियां लड़कियां।।

दिल को दीपक सरीखा जलाकर मयंक।
बस मनाती हैं दीवालियां लड़कियां।।

ख़त

जाके परदेश में मेरे यार मुझे ख़त लिखना।
ज़िन्दगी के मेरी ताजदार मुझे ख़त लिखना।।

याद जब जब सताए मेरी चैन आए नहीं।
जब हो दिल इस क़दर बेक़रार मुझे ख़त लिखना।।

वक़्ते शब बाम पै जब कभी चाँद को देखकर।
दिल करे रोने को ज़ार ज़ार मुझे ख़त लिखना।।

देखकर मेरी तस्वीर को हूक दिल में उठे।
जब न दिल पै रहे इख़्तियार मुझे ख़त लिखना।।

आतिशे दिल जो बरसात में, और भड़कने लगे।
जब सताए ये ठंडी बयार मुझे ख़त लिखना।।

जब भी भँवरा कोई देखकर मुस्कराए कली।
जब भी मौसम पै छाए बहार मुझे ख़त लिखना।।

जब भी तन्हाइयों में कभी याद आए तुम्हें।
माँ की ममता बहिन का दुलार मुझे ख़त लिखना।।

याद आए मिलन की घड़ी जब कभी ऐ 'मयंक'।
चाँद तारों पे होकर सवार मुझे ख़त लिखना।।

देख के चलना

प्यार की राह बहुत ही मुश्किल देख के चलना।
डगर कंटीली दूर है मंज़िल देख के चलना।।

राहे वफ़ा में संगे–सितम का ख़तरा भी है।
टूट न जाए शीशे का दिल देख के चलना।।

ग़ैर तो आकर राह तुम्हारी रोकेंगे ही।
अपने भी आऐंगे मुक़ाबिल देख के चलना।।

सोच समझ के कदम उठाने होंगे तुमको।
पग पग है पोशीदा क़ातिल देख के चलना।।

देखने वाले हुस्न के जलवों को मुड़ मुड़ के।
उलझ न जाए ज़ुल्फ़ों में दिल देख के चलना।।

वक़्त की आँधी क्या जाने कल क्या कर गुज़रे।
मुस्तक़बिल है फिर मुस्तकबिल देख के चलना।।

रहबर बनके रह ज़न साथ चलेंगे जब भी।
क़ुर्बे "मयंक" न होगा हासिल देख के चलना।।

याद तुम्हारी

छोड़ के आती दुनिया सारी।
तुमसे अच्छी याद तुम्हारी।।

प्यार नहीं मिलता दौलत से।
मेरी बात समझ व्यापारी।।

आप ख़यालों में क्या आए।
महक उठी मन की फुलवारी।।

पग पग खुद को ढूँढ रहा हूँ।
हाय! ये कैसी है लाचारी।।

सिंहासन पै जा बैठे हैं।
वो जो कल तक थे दरबारी।।

दिल में कुछ होंठों पै कुछ है।
ऐसी भी क्या दुनियादारी।।

चाहे "मयंक" अब जान भी जाए।
छोड़ न देना तुम खुददारी।।

जिन्दगी भर की कमाई

यूं किसी ने ज़िन्दगी भर की कमाई छीन ली।
जैसे लेखक से क़लम की रोशनाई छीन ली।।

स्वप्न खुशियों के दिखा कर तोड़ डाले इस तरह।
जैसे बच्ची को नई गुड़िया दिखाई छीन ली।।

आप ही बतलाइए ये भी कोई इंसाफ़ है।
चीज़ माँगे से अगर मिलने न पाई, छीन ली।।

शैख़ जी ने मैकदे में रिन्द की हर इक खुशी।
देखिए ईमान की देकर दुहाई छीन ली।।

जब मिरी इज़्ज़त गई शुहरत गई तो यूं लगा।
जैसे जीवन की किसी ने पाई पाई छीन ली।।

क्या कहा यारी निभाना काम मुश्किल है "मंयक"।
आपने तो बात मेरे लब पै आई छीन ली।।

मैं भी सोचूँ तू भी सोच

प्यार में क्या खोया क्या पाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।
किस लिए दिल का चैन गंवाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

हर चेहरे पै चेहरा हो तो कैसे कोई पहचाने।
कौन है अपना कौन है पराया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

क़ब्र में जाकर जिसको मिट्टी में मिल जाना है ऐसी।
लाश को क्यूं जाता नहलाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

पाप की दौलत से गढ़वाए गहने किस काम आएँगे।
कल जब मिट जाएगी काया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

तू भी क़ातिल मैं भी क़ातिल, मक्तल हम दोनों के दिल।
किसने किसका खून बहाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

धन के लिए दुर्गा लक्ष्मी और सरस्वती सी बहुओं का।
क्यूं जाता है जिस्म जलाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

किस के दम से पत्ती पत्ती बूटा बूटा है रंगीन।
किसने बहारों को महकाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

कुछ को मयस्सर दूध मलाई और किसी को क्यों उसने।
दाने दाने को तरसाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

जीना मरना क्या है "मयंक" और इन सब का है क्या मक्सद।
क्यूं इंसान जहां में आया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

कुछ भी नहीं

दूर तुझसे ज़िन्दगानी का मज़ा, कुछ भी नहीं।
तब हुआ मालूम ये, तेरे बिना कुछ भी नहीं।।

जुल्फ़े जानाँ को जो छू ले उस हवा के सामने।
ये बहारों की महक बादे–सबा कुछ भी नहीं।।

हम किसे इल्ज़ाम दें तकदीर को या आपको।
उम्रभर तड़पा किए लेकिन मिला कुछ भी नहीं।।

देखने में यूं तो ये जग अपना–अपना सा लगे।
ग़ौर से सोचें तो इसमें आपका कुछ भी नहीं।।

जब भी मिलते हैं, यही लगता है, हम हैं अजनबी।
गो दिलों के बीच अपने फ़ासला कुछ भी नहीं।।

जिसको देखो प्यार के जज़्बे से करता है गुरेज़।
अब जहां वालों की नज़रों में वफ़ा कुछ भी नहीं।।

आतिशे ग़म से दिले नादां का दामन जल गया।
और वो कहते है कि उसका हुआ कुछ भी नहीं।।

रूह की आवाज़ को पहचान कर, कीजे अमल।
वरना दुनिया में "मयंक" अच्छा–बुरा कुछ भी नहीं।।

ऐसा होने वाला है

बादल से शोले बरसेंगे, ऐसा होने वाला है।
घर में छुप कर रहना शहर में बलवा होने वाला है।।

एक ज्योतिषी का ये कहना घर में लाया है खुशियां।
छः छः बेटियों वाले घर में बेटा होने वाला है।।

खत्म हुए सब धर्म और ईमां, पाप ही पाप नज़र आऐं।
क्या कोई अवतार जहां में पैदा होने वाला है।।

कब तक आप छुपा पाओगे इश्क़ो मोहब्बत दीवानों।
आज नहीं तो कल फिर इसका चर्चा होने वाला है।।

प्यार में दिल हारो या जीतो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।
सबको पता है इस सौदे में घाटा होने वाला है।।

ईश्वर उस मासूम कली की जां की हिफ़ाज़त करना तू।
उसका इक लोभी भंवरे से रिश्ता होने वाला है।।

बीच शहर में छोड़के जाने वाले तुझको क्या मालूम।
तेरे बिना इस भीड़ में कोई तनहा होने वाला है।।

बढ़ती हुई इस आबादी को देख के लगता है ऐ "मयंक"।
इंसानों का खून-पसीना सस्ता होने वाला है।।

दौरे तरक़्क़ी

दौरे तरक़्क़ी ख़ौफ़ का आलम घबराए घबराए लोग।
अम्न तलाश रहे सदियों में लमहों के ठुकराए लोग।।

किरच किरच हस्ती की होकर कदम कदम पै फैल गई।
जब जब पत्थर बन के दिल के शीशे से टकराए लोग।।

सबको पता है बाढ़ आऐगी घर भी यक़ीनन डूबेंगे।
फिर भी साहिल पर बैठे हैं बस्ती नई बसाए लोग।।

दिल के जज़्बे और एहसास की मौत का अब ये आलम है।
फिरते हैं अपने कांधों पर अपनी लाश उठाए लोग।।

क्यूं इल्ज़ाम पड़ौसी को देते हैं वो इंसान कि जो।
अपने दीप से बैठे हैं खुद घर में आग लगाए लोग।।

ज़िन्दा लोगों को नहीं हासिल, चाहत की इक किरन "मयंक"।
लेकिन क़ब्रों पै बैठे हैं प्यार के दीप जलाए लोग।।

ज़िन्दगी

जो कि मुश्किल से मिली है ये ज़रा सी ज़िन्दगी।
आज अपने ही वतन में है प्रवासी ज़िन्दगी।।

आसमां पर चांद तारों की तुम्हें संगत मिली।
मैं ज़मी पर ढो रहा हूं ये धरासी ज़िन्दगी।।

हैं समन्दर में मगर प्यासे के प्यासे ही रहे।
जी रहे पानी में रहकर कर्बला सी जिन्दगी।।

साथ देकर स्वार्थ का मै जी रहा हूं आज तक।
व्यंग बाणों से बिंधी ये मंथरासी ज़िन्दगी।।

मत बनो कड़ुवे मगर इतने भी मीठे मत बनो।
लोग पी जाऐं समझकर शर्करा सी ज़िन्दगी।।

मां के आंचल का नहीं साया मयस्सर हो जिसे।
या खुदा मत दे मुझे वो बददुआ सी ज़िन्दगी।।

धर्म के बाज़ार में तन बेचती फिरती है आज।
देवता के नाम पर ये देवदासी ज़िन्दगी।।

कैद जुल्फों की भुला दे फ़र्ज और ईमां 'मयंक'।
क्या करूँगा लेके मैं ऐसी विलासी ज़िन्दगी।।

शाख़ से टूटा पत्ता

शाख से करके यूं जुदा मुझको।
ये किधर ले चली हवा मुझको।।

अब ख़िजाओं में है गुज़र अपना।
क्या बहारों से वास्ता मुझको।।

मौत के ख़ौफ से मैं ज़र्द नहीं।
अपना अंजाम है पता मुझको।।

देर तक लाश घर में रखते नहीं।
यूं न गुलदान में सजा मुझको।।

तर्क रिश्ता किया जो अपनों से।
उसकी ही तो मिली सज़ा मुझको।।

धूप बरसात सर्द, मौसम की।
अब डराती नहीं अदा मुझको।।

ख़त

जाके परदेश में मेरे यार मुझे ख़त लिखना।
जिन्दगी के मेरी ताजदार मुझे ख़त लिखना।।

याद जब जब सताए मेरी चैन आए नहीं।
जब हो दिल इस क़दर बेक़रार मुझे खत लिखना।।

वक़्ते शब बाम पै जब कभी चाँद को देखकर।
दिल करे रोने को ज़ार ज़ार मुझे ख़त लिखना।।

देखकर मेरी तस्वीर को हूक दिल में उठे।
जब न दिल पै रहे इख़्तियार मुझे ख़त लिखना।।

आतिशे दिल जो बरसात में, और भड़कने लगे।
जब सताए ये ठंडी बयार मुझे ख़त लिखना।।

जब भी भँवरा कोई देखकर मुस्कराए कली।
जब भी मौसम पै छाए बहार मुझे ख़त लिखना।।

जब भी तन्हाइयों में कभी याद आए तुम्हें।
माँ की ममता बहिन का दुलार मुझे ख़त लिखना।।

याद आए मिलन की घड़ी जब कभी ऐ 'मयंक'।
चाँद तारों पे होकर सवार मुझे ख़त लिखना।।

गिद्ध

दो गिद्ध साथ साथ उड़े जा रहे थे।
भाईचारे का अर्थ एक दूसरे को समझा रहे थे।
उन्हें दिखलाई पड़ी एक
लावारिस लाश ।
छोटा जा कर उसको खाने लगा।
अपनी क़िस्मत पर
इठलाने लगा।
बड़ा बोला "क्या करते हो भाई, ठहरो
अपने सगे सम्बन्धियों को बुलायेंगे,
तब मिल बाँट कर के इसको खाएँगे।
छोटा बोला, "हम ऐसा करेंगे
तो हमें क्या मिलेगा,
हम भूखे रह जाएँगे।"
बड़े को गुस्सा आ गया,
बोला "कैसी बातें करता है नालायक!
घटिया और बेकार ?
छोटे का सर शर्म से झुक गया
बोला माफ करना भाई, कुछ आदत ही
बिगड़ गई है,
क्योंकि चंद दिनों पहले,
इंसानों की बस्ती में रहकर
लौटा हूँ यार।

नदी के किनारे

नदी के दो किनारे।
सोचते थे बेचारे।
क्या कभी हम
एक हो पायेंगे ?
एक दूजे को गले
लगायेंगे ?
लोग कहते हैं
"किनारे कभी नहीं मिलते हैं"।
तभी ऊपर से इक आवाज़ आई
"आशा मत छोड़ो
मेरे भाई
थोड़े दिन ठहरो
गर्मी आएगी,
नदी सूख जायेगी
और तुम एक
हो जाओगे।

डोलियाँ लेकर चलो

बंद होंठों पर न यूं ख़ामोशियाँ लेकर चलो ।
गीत ग़ज़लों की लबों पर पंक्तियाँ लेकर चलो ।।

धन तुम्हारा कम न होगा, और भी बढ़ जाऐगा ।
मुफ़लिसों की बस्तियों में रोटियाँ लेकर चलो ।।

एक थे हम, एक हैं हम, इक रहेंगे हम सदा ।
मत दिलों के बीच इतनी दूरियाँ लेकर चलो ।।

देखते ही देखते ये रास्ते कट जायेंगे ।
मंज़िलों की साथ में परछाइयां लेकर चलो ।।

तोड़ते हों दम निराशा में जहां बेरोज़गार ।
अफसरो उनके लिए कुछ रिक्तियाँ लेकर चलो ।।

और भी ग़म हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा ।
मत लबों पर सिर्फ़ कुछ अठखेलियाँ लेकर चलो ।।

सच की राहों पर चलो तो अपनी फांसी के लिए ।
अपने हाथों में खुद अपनी रस्सियाँ लेकर चलो ।।

मुफ़लिसों की बेटियों के वास्ते अब ऐ "मयंक" ।
चुटकियाँ सिंदूर की और डोलियाँ लेकर चलो ।।

यार मिला दे

हो रब्बा यार मिला दे ।
तू उसका दरस दिखा दे ।।
सूरज चांद सितारों से तू मेरी मांग सजा दे ।
ओ रब्बा यार मिला दे ।।

मैं बिरहा की मारी बिरहन उसकी राह निहारूँ।
आहें भर कर आंसू पीकर मैं दिन रात गुज़ारूँ।।
मेरे प्यार का शोला उसके मन में भी भड़का दे ।
ओ रब्बा यार मिला दे ।।

पी बिन सेज लगे मोहि सूनी, सूनी लगे अटारी ।
मन करता है मर जाऊँ मैं दिल में मार कटारी ।।
रूठे प्रीतम को तू जाकर बस इतना बतला दे ।
ओ रब्बा यार मिला दे ।।

सावन में परदेश में जाकर क्यूं मुझको वो भूला।
अंखियों में बरसात लिए मैं कैसे झूलूं झूला।।
भूल गया परदेश में जाकर क्यूं वो क़स्में–वादे ।
ओ रब्बा याद मिला दे ।।

ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं

आँखें हैं अश्कबार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।
फ़ुर्क़त में तेरी यार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

बिखरी हुई हैं ज़ुल्फ़, परेशान हाल हूँ।
दामन है तार–तार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

तनहाइयों में चांद–सितारों के रूबरू।
हो–हो के बेक़रार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

ये सोच कर कि उजड़े हुए दिल के बाग़ में।
आऐगी फिर बहार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

मदहोश हो न जाऊँ मैं तिरछी निगाह से।
देखो न बार–बार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

बादल भी रो दिया है मेरी बेबसी पै आज।
मौसम है सोगवार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

ठुकराओ या क़ुबूल करो तुम "मयंक" को।
तुमको है इख़्तियार ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं।।

फूल

जिनको हासिल है ज्ञान फूलों का।
वो ही रखते हैं मान फूलों का।।

आमदे फ़स्ले गुल है, कांटों पर।
हो रहा है गुमान फूलों का।।

लोग तो कबसे इस फ़िराक में हैं।
कि मिटा दें निशान फूलों का।।

बज़्मे ग़म हो या महफ़िले इशरत।
दर्जा सबमें समान फूलों का।।

तेरा चेहरा फिरा है आँखों में।
जब भी आया है ध्यान फूलों का।।

कोई भी फूल, फूल से न लड़े।
ऐसा हो संविधान फूलों का।।

देखकर वो "मयंक" को बोले।
आ गया मेज़बान फूलों का।।

मुस्कराना बंद कर

मेरी हालत पै तू अब यूं मुस्कराना बंद कर ।
कमनसीबी मेरे घर तू आना–जाना बंद कर ।।

मुद्दतों बहते रहे हैं घर तिरे मझधार में ।
अब तो दरिया के किनारे घर बनाना बंद कर ।।

जो भी तुझको मांगना है सीधे ईश्वर से तू मांग ।
इस तरह बंदों के आगे गिड़गिड़ाना बंद कर ।।

इस तरह घुट–घुट के जीने से भला क्या फ़ायदा ।
मुस्करा और ग़म कलेजे से लगाना बंद कर ।।

हादिसों की ज़द में तू भी एक दिन आ जायेगा ।
ऐ फ़सादी दूसरों के घर जलाना बंद कर ।।

महल तेरी आरज़ू के डूबकर रह जायेंगे ।
अपनी आँखों में तू ये सपने सजाना बंद कर ।।

गर मसर्रत के गुलाबों की तमन्ना है तुझे ।
बाग़ में कांटों से तू दामन बचाना बंद कर ।।

सोज़े दिल का फिर किसी ने गीत छेड़ा है यहां ।
अब तो बुलबुल गीत खुशियों के सुनाना बंद कर ।।

ज़लज़ले समझा है जिनको वो खुदा का क़हर है ।
अब तो तू ये मंदिरो मस्जिद गिराना बंद कर ।।

है अगर हिम्मत तो खुल के कर तू उसका सामना ।
रख के कांधे पर मेरे गोली चलाना बंद कर ।।

सजदा गाहे यार में सर काट के रख दे "मयंक" ।
हर किसी चौखट पै अपना सिर झुकाना बंद कर ।।

रेल मज़दूर

रेल मज़दूर की तुम कहानी सुनो।
दास्ताँ उसकी मेरी जुबानी सुनो।।

सर पर गिट्टी का बोझा उठाता है वो।
रात दिन बस कुदालें चलाता है वो।।
करके मेहनत सदा मुस्कराता है वो।
लौह पथ गामिनी को बनाता है वो।।
दूर घर से, शहर से, नगर गाँव से।
जिसने जंगल में खो दी जवानी सुनो।।
दास्ताँ उसकी मेरी जुबानी सुनो।
रेल मज़दूर की तुम कहानी सुनो।।

ऐसा मजदूर कहलाए है गैंगमैन।
जिसको दिन में सुकूं और न रातों को चैन।।
दूर परिवार से जो बिताता है रैन।
रात दिन चैन को ही तरसते हैं नैन।।
जो अभावों में जीता रहा उम्र भर।
जिसकी दुख में कटी ज़िन्दगानी सुनो।।
दास्ताँ उसकी मेरी जुबानी सुनो।
रेल मज़दूर की तुम कहानी सुनो।।

धूप में सरदियों में व बरसात में।
काम करता ठिठुरती हुई रात में।।
चंद सिक्के मिलें उसको सौग़ात में।
फिर महाजन भी पीछे लगा घात में।।
राह कठिनाइयों से भरी है मगर।
फिर भी लगती है जिसको सुहानी सुनो।।
दास्ताँ उसकी मेरी ज़ुबानी सुनो।
रेल मज़दूर की तुम कहानी सुनो।।

पटरियों पर ही जीवन बिताता है वो।
रेल यात्रा सुरक्षित बनाता है वो।।
हर कहीं डाँट–फटकार खाता है वो।
अपने मालिक का ठेला चलाता है वो।।
जिसके दम से चले मेल और एक्सप्रेस।
जिसके दम से चलें राजधानी सुनो।।
दास्ताँ उसकी मेरी ज़ुबानी सुनो।
रेल मज़दूर की तुम कहानी सुनो।।

✤ ✤ ✤

लमहा मसर्रतों का बहरहाल आ गया।
ख़ुशियां मनाइए कि नया साल आ गया।।
यादों के ज़ख़्म भर गए, दाग़ों को क्या करूँ।
शीशा तो जुड़ गया है मगर बाल आ गया।।

उत्तर दो

किसने आग लगाई बोलो उत्तर दो।
बोलो मेरे भाई बोलो उत्तर दो।।

मंदिर में भी अम्न नहीं खूं बहता है।
कौन है उत्तरदाई बोलो उत्तर दो।।

जिसके पैर न फटे विवाई वो कैसे।
जाने पीर पराई बोलो उत्तर दो।।

सच के हक़ में फ़ाके, झूठे के हक़ में।
क्यूं है दूध मलाई बोलो उत्तर दो।।

मुर्दे के संग ज़िन्दा जिस्म जला डालो।
किसने रीति बनाई बोलो उत्तर दो।।

पाप के दरिया में नेकी कैसे डालूँ।
बोलो हातिमताई बोलो उत्तर दो।।

"मयंक" तुमने रात में कैसे सूरज से।
ये उजियारी पाई बोलो उत्तर दो।।

दोहे

आऐंगे गर भेड़िए पहन भेड़ की खाल।
पोल सभी खुल जाऐगी जब उतरेंगे बाल।।

आलस के ऐमाल को मत लगने दो अंग।
फ़ौलादी तन को कहीं लगे न देखो ज़ंग।।

सोच समझ कर ख़र्च की अपनी आदत डार।
जितनी हो चादर बड़ी, उतने पैर पसार।।

मेरे भारत देश की दौलत है ये आम।
चांदी जैसी हर सुबह सोने जैसी शाम।।

एक फूल अर्थी चढ़े, दूजा पीर मज़ार।
इक जैसी निज गंध का सदा करे संचार।।

मज़दूर की बेटी

सोच रही है जिसने मेहनत सारे दिन भरपूर की,
बेटी एक मजदूर की। सोच रही है,
ईश प्रार्थना क्यों नहीं सुनता दुनिया में मजबूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

गोरे तन पै मैले कपड़े उसके हाथ कुदाल है,
श्रम के स्वेद बिन्दु से सज्जित गोरा गोरा भाल है,
झांक रही चिथड़े वस्त्रों से किरनें तन के नूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

उसकी खातिर ग़म लम्बे हैं खुशियों का तन बौना है,
धन अभाव से ग्रस्त उसकी कुटिया का कोना कौना है,
पीर बसा रक्खी है उसने तनमन में नासूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

कैसे कैसे स्वप्न सजाए बैठी थी अपने मन में,
शादी होगी मांग भरेगी, खुशियाँ होंगी आंगन में,
राजकुंवर आऐगा कोई चुटकी ले सिन्दूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

बिन दहेज उस बूढ़े के संग शादी की तैयारी है,
जिसके पहले से छः बच्चे और दम की बीमारी है,
चाँदी जैसे बाल है जिसके सूरत है लंगूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

सबको है बेटे की ख़्वाहिश बेटी तो अभिशाप है,
अजब रस्म है इस दुनिया की बेटी होना पाप है,
है कोई जो करे धज्जियाँ इस पापी दस्तूर की,
बेटी एक मज़दूर की। सोच रही है।।

चुटकुले

दिल बुझा हो तो भाते नहीं चुटकुले।
अब हमें गुदगुदाते नहीं चुटकुले।।

अकबरो–बीरबल की तरह आजकल।
राह सच्ची दिखाते नहीं चुटकुले।।

हो गया है यक़ीनन कोई हादसा।
आजकल वो सुनाते नहीं चुटकुले।।

जाने किस बात पै हमसे नाराज हैं।
सुनके अब मुस्कराते नहीं चुटकुले।।

इस क़दर हर कोई व्यस्त है आजकल।
लोग सुनते सुनाते नहीं चुटकुले।।

आज रिश्तों में इतनी दरारें पड़ीं।
दिल को दिल से मिलाते नहीं चुटकुले।।

हँसते हँसते निकलते थे आँसू "मयंक"।
अब खुशी से रुलाते नहीं चुटकुले।।

होली है भई होली है

होली है भई होली है।
नई फसल घर में आई है खेतों से खलियानों से।
घर घर भरा हुआ है गेहूँ और चने के दानों से।
रंग बिरंगी खुशियों से अब भरी हुई हर झोली है।
होली है भई होली है।

ढोलक झांझ मंजीरे लेकर घर से निकले हुरियारे।
होली के गीतों से गूंजे, गलियां, आंगन, चौबारे।
रंग गुलाल उड़ाती आती मस्तानों की टोली है।
होली है भई होली है।

शंकर जी की बूटी पीकर झूमे हैं सब मस्ती में।
कुछ चाहत के रंग में रंग कर घूम रहे हैं बस्ती में।
चुनरी भीगी, लहंगा भीगा, भीगी हर इक चोली है।
होली है भई होली है।

जली होलिका जली बुराई ऐसा माना जाता है।
रंग बिरंगा खुशियों का त्यौहार हमें समझाता है।
हर माथे पै रंग गुलाल है, चंदन टीका रोली है।
होली है भई होली है।

भइए

चलते चलते जो डर गया भइए।
ये समझ लो कि मर गया भइए।।

जिसको सबसे ज़ियादा वोट मिले।
उसका जीवन संवर गया भइए।।

जब मिनिस्टर थे गाड़ी बंगले थे।
वो ज़माना किधर गया भइए।।

बन गया जो वज़ीर से प्यादा।
वो नज़र से उतर गया भइए।।

ईद का दिन था चांद लाखों थे।
जब भी मैं बाम पर गया भइए।।

गर सचाई का साथ देते हो।
तो समझ लो कि सर गया भइए।।

ग़म ने जिसको दिलाया था जीवन।
खुशियां पाते ही मर गया भइए।।

मरते–मरते भी वो जफ़ाओं का।
मुझ पै इल्ज़ाम धर गया भइए।।

जिस ज़माने में खुश थे हम ओ "मयंक"
वो ज़माना गुज़र गया भइए।।

कम हो गईं

दर्द कुछ ऐसा बढ़ा खुशहालियां कम हो गईं।
जब से मेरी आप से नज़दीकियाँ कम हो गईं।।

माँ वहीं, ममता वही, बच्चा वही, झूला वही।।
वक़्त के होंठों पै लेकिन लोरियां कम हो गईं।

आपने बौने दरख़्तों से ये फल तो ले लिए।
राहगीरों के लिए परछाइयां कम हो गईं।।

मैं फलों वाले दरख़्तों की तरह जब झुक गया।
लोग ये कहने लगे खुद्दारियां कम हो गईं।।

लोग गाँवों से निकल कर बस रहे हैं शहर में।
इसलिए शहरों में शायद चोरियां कम हो गईं।।

छोड़ कर मुझको सभी के आशियाँ महफूज है।
मेघ के दामन में शायद बिजलियाँ कम हो गईं।।

चल 'मयंक' उठ चल बुलाती है तेरी मंजिल तुझे।
आसमां भी साफ है और आंधियां कम हो गईं।।

ये बस्ती है अैयारों की

कुछ सुनना कुछ कहना जिसकी आदत है दीवारों की।
ये बस्ती है अैयारों की ये बस्ती है अैयारों की।।

बोल चाल पर लगी हुई हर ओर यहां पाबंदी है।
चुगली और मुंहखोरी देखो जिसकी आदत गंदी है।।
कहीं कहीं पर उड़ती देखी खाक यहाँ दीवारों की।
ये बस्ती है अैयारों की ये बस्ती है अैयारों की।।

यहाँ लाश बिकती इंसां की कफनों का बाजार भी है।
दुकानें है जिस्मों की और ममता का व्यापार भी है।।
आती है आवाज़ यहां पर आदमखोर सियारों की।
ये बस्ती है अैयारों की ये बस्ती है अैयारों की।।

हर इक मौलवी सच्चा बंदा हर पण्डा अवतार है।
राजनीति वाला भी अब तो धर्म का ठेकेदार है।।
यहां तिजारत होती है इंसानों के किरदारों की।
ये बस्ती है अैयारों की ये बस्ती है अैयारों की।।

कुछ लोगों का आग लगाना खून बहाना धंधा है।
क्या कानून करेगा इसमें वो खुद भी तो अंधा है।।
कमी नहीं है जहां विभीषण घरभेदी गद्दारों की।
ये बस्ती है अैयारों की ये बस्ती है अैयारों की।।

गीतिका

जान जाए वतन की खुशी के लिए।
और क्या चाहिए ज़िन्दगी के लिए।।

बस वो आज़ाद रहकर जिए और मरे।
और क्या चाहिए आदमी के लिए।।

अपनी आंखों में सूरज छिपाए हुए।
हम भटकते रहे रौशनी के लिए।।

मादरे हिन्द का चित्र हो सामने।
और क्या चाहिए बंदगी के लिए।।

जो भी आया उसे हमने अपना लिया।
हिन्द मशहूर है दोस्ती के लिए।।

जान देकर निभाई सदा दोस्ती।
मौत बन कर रहे दुश्मनी के लिए।।

छोड़कर एक ईश्वर को कब ऐ मयंक।
हमने सर को झुकाया किसी के लिए।।

गीतिका

मेरे बच्चों के लिए दो वक़्त का आटा न था।
हाँ मता–ए ज़र्फ़ का घर में कोई घाटा न था।।

उसके मरने पै किसी की आँख में आँसू न थे।
ज़िन्दगी का जिसने मिलजुल के सफ़र काटा न था।।

सड़ रही थी बेबसी की लाश इक फुटपाथ पर।
वक़्त के कुत्तों ने खूं उसका अभी चाटा न था।।

दोस्तों की दोस्ती ने दिल के टुकड़े कर दिए।
दुश्मनों की दुश्मनी ने तो गला काटा न था।।

जीत में तो जीत थी ही, हार में भी जीत थी।
था मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा प्यार में घाटा न था।।

नफ़रतों की चोटियों पै बैठकर रोता रहा।
जिसने दिल की खाइयों को प्यार से पाटा न था।।

दिल धड़कने की सदा आती रही थी ऐ 'मयंक'।
कुछ ख़मोशी थी, मगर इतना भी सन्नाटा न था।।

गीतिका

ग़म की परछाइयाँ ओढ़ कर धूप में।
ज़िन्दगी का किया है सफ़र धूप में।।

अब्र वीरानियों में बरसते रहे।
और झुलसता रहा मेरा घर धूप में।।

जो बनाता है सबके लिए सायबां।
वो पसीने से है–तरबतर धूप में।।

साय–ए–अब्रे रहमत की चाहत लिए।
मैं खड़ा ही रहा उम्र भर धूप में।।

ज़ुल्फ़े जानाँ के साए में आराम लो।
क्यूँ भटकते हो यूँ दरबदर धूप में।।

दिन चढ़े बाम पै वो गए तो लगा।
जैसे निकला हो कोई क़मर धूप में।।

जिसने सैयाद पै अपना साया किया।
बस उसी के जले बालोपर धूप में।।

गर सराबों के पीछे न हम भागते।
पांव जलते नहीं रेत पर धूप में।।

चढ़ते सूरज की पूजा करें जो बशर।
क्यूँ वो ग़मगीन हैं इस क़दर धूप में।।

यकबयक तीरगी से जो निकला "मयंक"।
थी चकाचौंध उसकी नज़र धूप में।।

गीतिका

तूफ़ान तो आखों को दिखाई नहीं देता।
क्या शोर भी अब तुमको सुनाई नहीं देता।।

माँ ने कहा पिता से कि बेटा जवां हुआ।
अब घर में लाके अपनी कमाई नहीं देता।।

हम अपने पड़ौसी से गिला किसी लिए करें।
जब घर में साथ भाई का भाई नहीं देता।।

जिसको ग़मों से मौत ने दिलवाई हो निजात।
उस शख़्स को तो कोई बधाई नहीं देता।।

दिल को जला के रोशनी करते हैं हम "मयंक"।
जब तीरगी में कुछ भी दिखाई नहीं देता।।

✤ ✤ ✤

नक़ाबे रूख उठाकर जब कोई पहलू बदलता है।
तो यूं लगता है जैसे सुबहे–दम सूरज निकलता है।।
जहां के लोग ये चेहरे पै चेहरे क्यूं लगाते हैं।
कहीं चेहरे बदलने से किसी का दिल बदलता है।।

गीतिका

ये मत पूछो कल क्या होगा।
सोचो अगले पल क्या होगा।।

जिसने निकाले तूफां के बल।
उसकी जिबीं पर बल क्या होगा।।

फिर से किया है, कल का वादा।
और न जाने, कल क्या होगा।।

झील में दौलत की मत जाना।
इस जैसा दलदल क्या होगा।।

एक मुअम्मा है, ये जीवन।
समझो इसका हल क्या होगा।।

दिल में नहीं जब, उसका जज्बा।
जाकर फिर जंगल क्या होगा।।

इसमें पलते हैं, पैगम्बर।
मां जैसा आंचल क्या होगा।।

अश्क–ऐ निदामत से भी बढ़कर।
'मयंक' गंगा जल क्या होगा।।

गीतिका

हाकिम वक़्त कहां सोए है सोने वाले।
हादिसे शहर में होते न होने वाले।।

हिचकियां लेके न रो क़ब्र पै रोने वाले।
जाग जाऐं न कहीं चैन से सोने वाले।।

नाखुदाओं पै यक़ीं सोच समझ कर करना।
लाके साहिल पै डुबोते है डुबोने वाले।।

नींद का लुत्फ़ तो फुटपाथ पै लेता है ग़रीब।
जिससे महरूम हैं रेशम के बिछौने वाले।।

कुछ भी कर तेल तो निकलेगा नहीं बालू से।
आस मक्खन की न कर छाछ बिलोने वाले।।

क्या मिलेगा तुझे धनवान से नफ़रत के सिवा।
पैरहन अपना पसीने में भिगोने वाले।।

आबले पांवों के फूटे तो मेरी पीर गई।
शुक्रिया शुक्रिया ऐ ख़ार चुभोने वाले।।

किसकी यादों में बनाता है गुहर की माला।
आह के धागे में अश्कों को पिरोने वाले।।

कृष्ण की राधा से कह दो कि ज़माने में "मयंक"।
अब हैं अंदाज़ कहां श्याम सलोने वाले।।

गीतिका

क्या मैं बताऊँ, क्या है मन में।
कौन बसा है हर धड़कन में।।

ये खिल्वत, ये याद तुम्हारी।
फूल खिलाते, सूने वन में।।

क्यों शरमा कर, मुंह फेरा है।
क्या देखा, तुमने दरपन में।।

चांदनी बन कर तुम आए हो।
यादों के सूने आंगन में।।

उनके गम में अश्क बहे, यूं।
जैसे रिम झिम हो सावन में।।

बन कर दीप जरा आ जाओ।
फिर इस अंधियारे जीवन में।।

किसका दर्द बसा है, देखो।
इन नयनों के सूनेपन में।।

अब वो जवानी में खोया है।
साथ दिया जिसने बचपन में।।

चेहरा जुल्फों में है, ऐसे।
जैसे "मयंक" हो बीच गगन में।।

गीतिका

मैंने कहा हो जल्वागर, उसने कहा नहीं नहीं।
मैंने कहा मिला नज़र, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा, कि शाम है, उसने कहां कि, जाम है।
मैंने कहा, कि जाम भर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा पयाम लो, उसने कहा सलाम लो।
मैंने कहा ठहर, ठहर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा, कि, रुख़ इधर, उसने कहा, है चश्मतर।
मैंने कहा कि, सब्र कर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा, कहां मिलें, उसने कहा जहां कहें।
मैंने कहा, किः बाम पर, उसने कहा नहीं नहीं।।

मैंने कहा, कि, हो नज़र, उसने कहा कहां किधर।
मैंने कहा 'मयंक' पर, उसने कहा नहीं नहीं।।

✤ ✤ ✤

प्यार में दीवाना हो जाना अच्छा लगता है।
दीवारों से सर टकराना अच्छा लगता है।।
इक दिन ऐसा आयेगा, दिल भी मिल जाऐगा।
इस लिए उनसे हाथ मिलाना अच्छा लगता है।।

गीतिका

हमने देखे हैं पत्थर भी गलते हुए।
और पहाड़ों से चश्मे उबलते हुए।।

सहमा सहमा है बचपन नहीं मांगता।
अपनी माँ से खिलौने मचलते हुए।।

अपने रहबर को इल्जाम देते हैं वो।
राह चलते नहीं जो सम्हलते हुए।।

मौसमों का बदलना, चलो ठीक है।
हमने देखे हैं इंसां बदलते हुए।।

राह मुश्किल है और हम सफर भी नहीं।
सोच लेना ये घर से निकलते हुए।।

क्यूं प्रपन्ची सदा भूल जाता है ये।
खुद को छलता है गैरों को छलते हुए।।

दूर महलों में आया उजाला नज़र।
जब भी देखा है छप्पर को जलते हुए।।

है अभी भी समय काम कर लो "मयंक"।
वरना, रह जाओगे हाथ मलते हुए।।

गीतिका

चलो आइए महरबां, हौले, हौले,
चले प्यार का कारवां, हौले, हौले।

जिगर को तुम अपने ज़रा थाम लेना,
सुनायेंगे हम दास्तां हौले, हौले।

क़दम से क़दम हम मिला के चलेंगे,
बनेंगे वफ़ा के निशां हौले, हौले।

मुहब्बत का इज़हार जब हम करेंगे,
वो खोलेंगे अपनी जुबां हौले, हौले।

नक़ाब उसने रुख से उठाया कुछ ऐसे,
निकलने लगी मेरी जां हौले, हौले।

"मयंक" उनको नग़मे सुनाये चला जा,
तभी होंगे वो शादमां हौले, हौले।

✤ ✤ ✤

मैकदे में क़याम हो अपना।
हर सुराही पै नाम हो अपना।।
जाम उनका हो अपने हाथों में।
उनके हाथों में जाम हो अपना।।

गीतिका

मोह लेता है, मन धीरे–धीरे।
आपका बाँकपन धीरे–धीरे।।

वार करते हैं हम पर मुसल्सल।
आपके ये नयन धीरे–धीरे।।

हिज्र में जां मेरी ले ही लेगी।
देखिए ये घुटन धीरे–धीरे।।

आ ही जायेगा उनको जहां में।
दोस्ती का चलन धीरे–धीरे।।

मेरी आमद से सजने लगेगी।
आपकी अंजुमन धीरे–धीरे।।

दूर वो झुक रहा है जमीं पर।
देखिये तो गगन धीरे–धीरे।।

आपके मन में जलने लगेगी।
प्यार की अब अगन धीरे–धीरे।।

देख कर सब तुम्हें मुस्कुरायें।
हो के मन में मगन धीरे–धीरे।।

ऐ 'मयंक' उनके गेसू को छू कर।
चल रही है पवन धीरे–धीरे।।

गीतिका

झूम रहा हूं जिस बस्ती में मैख़्वारों की बस्ती है।
चारों ओर यहां पर यारो बस मस्ती ही मस्ती है।।

ग़म का कोई काम नहीं है, मय पी लो और ग़म भूलो।
इक बोतल में खुशी खरीदो देखो कितनी सस्ती है।।

वाइज़ तो कहता ही रहेगा, पीने वाला काफ़िर है।
काबे का अहसास है मय में, और काशी की मस्ती है।।

जो रिन्दों के साथ में रहकर, होश सलामत रखता है।
उसका जीना भी क्या जीना, वो हस्ती क्या हस्ती है।।

मय में गेसू की फ़ितरत है, और नागिन की आदत है।
पहले अंग लिपटती है ये, फिर चुपके से डसती है।।

'मयंक' है ये चार दिनों की चांदनी जिसको कहते हैं।
पी ले, और पिलाले वरना, फिर पस्ती ही पस्ती है।।

✤ ✤ ✤

रोज पीता हूँ, छोड़ देता हूँ ।
तौबा करता हूँ तोड़ देता हूँ।।
जब भी आती है हाथ में बोतल।
उसकी गर्दन मरोड़ देता हूँ मैं।।

गीतिका

दर्शन की प्यासी आंखों को नींद न आई रातों में।
अश्कों ने आंखों से बहकर आग लगाई रातों में।।

उस तक मेरा यह सन्देशा पहुंचा दे ऐ मस्त हवा।
मेरे दिल को तड़पाती है ये तनहाई रातों में।।

हिज्र की रातें कैसे गुज़रीं किसको बताऐं हाल अपना।
दूर रहा साया भी हम से इन हरजाई रातों में।।

प्रेम की बरखा बरसी लेकिन पागल मन प्यासा ही रहा।
तब हमने अपने अश्कों से प्यास बुझाई रातों में।।

सांसों के तारों में हमने आस के फूल पिरोए हैं।
काश कभी आ जाए मिलने वो हरजाई रातों में।।

एक अजूबा तुमको बताऐं ऐसा देखा और न सुना।
बरखा ने ही देखो 'मयंक' अब आग लगाई रातों में।।

❖ ❖ ❖

एक दिन ये अजब हादसा हो गया।
ख़ुद मुझसे मेरा सामना हो गया।।
मौत आई किसी को तो ऐसा लगा।
जिस्म से जैसे साया जुदा हो गया।।

गीतिका

देख लीजे जो देखा नहीं।
ज़िन्दगी का भरोसा नहीं।।

ग़म की शिद्दत उसे क्या पता।
दिल कभी जिसका टूटा नहीं।।

आओगे ख़्वाब में किस तरह।
मुद्दतों से मैं सोया नहीं।।

जिसको चाहत फलों की रहे।
बाग़ में खार बोता नहीं।।

बदनसीबी मेरी देखिए।
जो भी चाहूँ वो होता नहीं।।

पार तूफ़ां से हो जाते हम।
ना खुदा जो डुबोता नहीं।।

दिल के बदले में दिल लीजिए।
इससे बढ़ कर के सौदा नहीं।।

तुमने बदनाम मुझको किया।
बे सबब यूं ही रुसवा नहीं।।

प्यार होता है यूं ही 'मयंक'।
प्यार करने से होता नहीं।।

गीतिका

यूं बिछुड़ कर आपसे जीने में क्या रह जाऐगा।
आंसुओं और सिसकियों का सिलसिला रह जाऐगा।।

पूर्ण होगी ज़िन्दगी की खोज जब तक आपकी।
उड़ चुका होगा परिंदा घौंसला रह जायेगा।।

नफ़रतों की आग कितना भी जला दे बाग को।
पेड़ लेकिन प्यार का फिर भी हरा रह जाऐगा।।

ग़म न हों, आंसू न हों, आहें न हों, तड़पन न हो।
फिर भला इस ज़िन्दगी में क्या मज़ा रह जाऐगा।।

छीन लेगा हर खुशी दुर्भाग्य तेरी ऐ "मयंक"।
और तू बेचारगी से देखता रह जाएगा।।

✤ ✤ ✤

यूं तो मेरी आंसुओं से है शनास बहुत।
हां मगर आते हैं तो करते हैं रूसवाई बहुत।।

किस से कीजे कैसे कीजे इल्मोफ़न पै गुफ़्तगू।
आज कल अहले अदब कम है तमाशाई बहुत।।

गीतिका

हर ख़ुशी पर छा गये ग़म आपके जाने के बाद।
कितने तन्हा हो गये हम आपके जाने के बाद।।

अब न कोई आरज़ू है और न कोई जुस्तजू।
हैं सभी अरमान बेदम आपके जाने के बाद।।

अब न कोई गुल खिलेगा और न चटकेगी कली।
इस क़दर बदला है मौसम आपके जाने के बाद।।

आपसे होकर जुदा हर इक बशर है ग़म ज़दा।
हर किसी की आंख हैं नम आपके जाने के बाद।।

किस तरह सुलझायेंगे हम ज़िन्दगी की उलझनें।
ज़िन्दगी में पड़ गये ख़म आपके जाने के बाद।।

है उदासी ज़िन्दगी के साज पर कुछ इस तरह।
हो गई ख़ामोश सरगम आपके जाने के बाद।।

सबके होंठों से तबस्सुम रूठ कर रुख़सत हुआ।
बस उदासी का है आलम आपके जाने के बाद।।

आपकी फ़ुर्क़त की घड़ियां काटते कटती नहीं।
वक़्त की रफ़्तार है कम आपके जाने के बाद।।

अश्क आंखों में लिए श्रद्धांजली देता 'मयंक'।
है झुका हर दिल का परचम आपके जाने के बाद।।

गीतिका

प्यार करते नहीं, तो क्या करते,
उन पै मरते नहीं, तो क्या करते ।

फूल बनकर के उनकी राहों में,
हम बिखरते नहीं तो क्या करते।

जिस पै तुम महरबान हो उसके,
दिन संवरते नहीं तो क्या करते।

तुम ही सोचो, तुम्हारी फुर्क़त में,
आह भरते नहीं, तो क्या करते।

उनकी नज़रों के रास्ते दिल में,
हम उतरते नहीं तो क्या करते।

उनकी उल्फ़त में जां निसार 'मयंक',
कर गुज़रते नहीं, तो क्या करते।

✤ ✤ ✤

हम तो गिर गिर के उठे, उठ के कई बार गिरे।
वो क्या उठ पाऐगा जिस शख़्स का किरदार गिरे।।
तेरे जैसे जो ख़रीदार हों, दो चार "मयंक"।
सच का बाज़ार चढ़े झूठ का बाज़ार गिरे।।

गीतिका

अब मैं पत्थर तलाश करता हूं,
गोया शंकर तलाश करता हूं।

आपके पास तक जो पहुंचा दे,
वो मुक़द्दर तलाश करता हूं।

जो कि मंज़िल का दे पता मुझको,
ऐसा रहबर तलाश करता हूं।

खुद मुझे भी तो ये नहीं मालूम,
किसको अक्सर तलाश करता हूं।

देख कर जिसको आंख भर आए,
ऐसा मंज़र तलाश करता हूं।

जो तसव्वुर में है उसे क्यूं मैं,
आज दर–दर तलाश करता हूं।

पैर अपने पसार लूं जिसमें,
ऐसी चादर तलाश करता हूं।

डूबने को "मयंक" आंखों में,
इक समन्दर तलाश करता हूं।

गीतिका

मत निगाहें फेर तू मतलब निकल जाने के बाद,
कौन पूछेगा तुझे कल हुस्न ढल जाने के बाद।

गिर के उठने का हुनर सीखा है हमने तुझसे ही,
अब मेरा मुमकिन नहीं गिरना सम्भल जाने के बाद।

रात में छिप छिप के मिलने की जिसे आदत रहे,
किस तरह तुझसे मिले वो रात ढल जाने के बाद।

गो जवानी ढल गई, फितरत न बदली आपकी,
आज भी बाकी हैं बल रस्सी के जल जाने के बाद।

रात भर तुम भी चमक लो, रात अपनी है 'मयंक',
क्या करोगे तुम बताओ, रात ढल जाने के बाद।

✤ ✤ ✤

बृज रज तुम पर हम बलिहारी।
जनमे तुझ पर कृष्णा मुरारी।।
इस रज से जो तिलक लगाऐं।
भाग्यवान हैं वो नर नारी।।

गीतिका

देखकर कानों में उनके बालियां,
झूम उठी फूलों की नाजुक डालियां।

तेरी आंखों की करूं तारीफ़ क्या,
मय की है ये दो छलकती प्यालियां।

आंखों आंखों में उड़ा लेती हैं दिल,
ख़ूब हैं ये दिल चुराने वालियां।

जब से देखा प्यार से तुमने मुझे,
मेरे घर आंगन में हैं खुशहालियां।

बज़्म में हरसू बिखर जायेगा रंग,
जब भी आ जाएंगी मोरावालियां।

देखकर मुझको बजाते हैं 'मयंक',
मेंहदी वाले हाथं। से वो तालियां।

गीतिका

ग़म छिपाना बड़ा ज़रूरी है,
मुस्कराना बड़ा ज़रूरी है।

उनकी राहों में रोशनी के लिए,
दिल जलाना बड़ा ज़रूरी है।

शाने महफ़िल अगर बढ़ानी है,
उनका आना बड़ा ज़रूरी है।

जो निगाहों से दूर हैं उनको,
भूल जाना बड़ा जरूरी है।

बोझ दिल का उतारने के लिए,
गुनगुनाना बड़ा ज़रूरी है।

ऐ 'मयंक' उनकी राह में तेरा,
जगमगाना बड़ा ज़रूरी है।

गीतिका

लीजिए वो नाम उठते बैठते,
जिससे हो आराम उठते बैठते।

हो गया बदनाम उठते बैठते,
ये दिले नाकाम उठते बैठते!

दिल लगा के बेवफ़ा से बेवजह,
ले लिया इल्ज़ाम उठते बैठते।

उनकी आंखों से सदा पीता हूं मैं,
प्यार ही के जाम उठते बैठते।

प्यार जिसको भी मिला कुछ आपका,
बन गया गुलफ़ाम उठते बैठते।

आपकी कुर्बत से मुझको मिल गए,
आज चारों धाम उठते बैठते।

इश्क़ में जो मिट गए बस हो गए,
उनके किस्से आम उठते बैठते।

नफ़रतों के शहर में देना 'मयंक',
प्यार का पैगाम उठते बैठते।

गीतिका

मध्यम है नूर चांद सितारों में आज कल,
खिलते नहीं हैं, फूल बहारों में आज कल।

दुल्हन की डोलियां न उठीं, जानते हो क्यों,
दमख़म नहीं रहा है कहारों में आज कल।

साहिल को छोड़ जानिबे–तूफ़ान रुख़ करो,
देखो जो तुम दरार किनारों में आज कल।

सुनकर मिरा फ़सान ए गम लोग हैं करते
मेरा शुमार प्यार के मारों में आज कल।

लग़ज़िश है. मेरे पावों में बहकी है चश्म भी,
डूबा हुआ हूं मस्त नज़ारों में आज कल।

दीवार है शकिस्ता सहारा न लो 'मयंक',
अब दम नहीं रहा है सहारों में आज कल।

गीतिका

यूं तो हर एक शख़्स का ईमान होना चाहिए,
क़ब्ल इसके वो मगर इन्सान होना चाहिए।

हो जहां शिव की अज़ानें और ख़ुदा की आरती,
वो इबादतगाह हिन्दुस्तान होना चाहिए।

हो नहीं जिसका क़लम पाबंद मज़हब से कभी,
हर कवी शायर मियां रसखान होना चाहिए।

एक तरफ मुस्लिम पढ़ें गीता–ओ–रामायण पुरान,
हिन्दुओं का राहबर कुरआन होना चाहिए।

गीत कितने भी लिखें शायर मगर ये ध्यान दें,
एकता हर गीत का उन्वान होना चाहिए।

मोमिनों के ज़ेहन में सूरत कन्हैया की रहे,
हिन्दुओं के क़ल्ब में रहमान होना चाहिए।

ऐ 'मयंक' इस हिन्द से बढ़ कर कोई मज़हब नहीं,
हिन्द पर हर शख़्स को कुर्बान होना चाहिए।

गीतिका

दिल को अच्छे लगे दिलरुबा कह दिया।
क्या बुरा कर दिया क्या बुरा कह दिया।।

हमसे सजदे की उम्मीद करते हैं वो।
जिनको भूले से हमने खुदा कह दिया।।

जिसको देखो वही हमसे नाराज़ है।
तुमने महफ़िल में लोगों से क्या कह दिया।।

इसलिए हम ज़माने में बदनाम हैं।
जो भी दिल ने हमारे कहा कह दिया।।

सरफ़रोशी का चर्चा किया जब कभी।
दोस्तों ने हमें सरफिरा कह दिया।।

आपसे ऐसी उम्मीद कब थी "मयंक"।
आपने भी हमें बेवफ़ा कह दिया।।

गीतिका

जिधर हंसों का जोड़ा जा रहा है।
उधर ही तीर छोड़ा जा रहा है।।

दिखाते हैं जो चेहरों की हक़ीकत।
उन्हीं शीशों को तोड़ा जा रहा है।।

कतर डाले हैं दोनों पंख जिसके।
उसे आज़ाद छोड़ा जा रहा है।।

सजाएँ बेक़सूरों के लिए हैं।
गुनहगारों को छोड़ा जा रहा है।।

हिना और चूड़ियाँ हैं जिसकी रौनक़।
वहीं बाजू मरोड़ा जा रहा है।।

किसी को मिल रही है ज़िन्दगानी।
किसी का खूं निचोड़ा जा रहा है।।

ज़माने की ये साज़िश है कि तुमसे।
हमारा नाम जोड़ा जा रहा है।।

जो पहरे पै "मयंक" अपने सजग है।
वहीं कांधा झिझोड़ा जा रहा है।।

गीतिका

उठाए ज़ुल्म कब तक और झेले सख्तियाँ कब तक।
लबों पै दोस्तों मजबूर के खामोशियाँ कब तक।।

ज़माना पेट भरने के लिए क्या–क्या नहीं करता।
चने नाकों से चबवाएँगी आखिर रोटियाँ कब तक।।

तेरे बंदे टके के भाव में नीलाम होते हैं।
बता इंसां के जिस्मों की लगेगी बोलियाँ कब तक।।

चलेंगे कब तलक इंसां के अरमानों पै बुल्डोजर।
कि महलों के लिए कुर्बान होगी खोलियाँ कब तक।।

सरे बाज़ार यूं कब तक बिकेंगे ये जवां लड़के।
सुहागन डोलियाँ बनती रहेंगी अर्थियाँ कब तक।।

बढ़ो और सीन–ए–दुश्मन में अपना घोंप दो ख़ंजर।
कि तुम पहने हुए बैठे रहोगे चूड़ियाँ कब तक।।

भला दैरो हरम के नाम पै नफ़रत के शोलों को।
हवा देती रहेंगी दोस्तों ये कुर्सियाँ कब तक।।

नहीं है जिनकी खातिर सर छुपाने के लिए छप्पर।
खड़ी करते रहेंगे दूसरों की कोठियाँ कब तक।।

गीतिका

खुशबू देना है काम फूलों का।
कीजिए एहतराम फूलों का।।

आज हैं कल रहें रहें न रहें।
लेलें लेलें सलाम फूलों का।।

सबके दिल पै ये राज करते हैं।
है ज़माना गुलाम फूलों का।।

चाहे डोली हो चाहे मैयत हो।
कीजिए इंतज़ाम फूलों का।।

क्यों हसीनों के ज़र्द चेहरे हैं।
किसने लूटा निज़ाम फूलों का।।

लाशे आशिक पै दफ़्न से पहले।
किसलिए तामझाम फूलों का।।

थोड़े दिन की है ज़िन्दगी ये "मयंक"।
है यही तो पयाम फूलों का।।

गीतिका

यूं मज़हब और धर्म के अंतर की गुत्थी सुलझानी होगी।
नफ़रत के इस अंधियारे में प्यार की जोत जलानी होगी।।

सच्चा इंसां बनना है, तो इतनी बात समझ लेना तुम।
पीना होगा ज़हर तुम्हें सीने पर गोली खानी होगी।।

इक दिन ऐसा भी होगा जब तुम निकलोगे गलियारों में।
मोड़ के मुँह जाने वाली हर शय जानी पहचानी होगी।।

तुमको फरिश्ता बनना है तो अपने सलीब को ढोकर खुद ही।
जिस्म के हर हिस्से पर, टंगकर, कील तुम्हें ठुकवानी होगी।।

मेरी उलझन से वाबस्ता रखनी है गर अपनी उलझन।
तो फिर मेरी ज़ुल्फ़ें परीशां तुमको ही सुलझानी होगी।।

अहले ज़माना मेरी कहानी सुनके, यक़ीन न कर पाऐंगे।
मेरा फ़साना सुनकर शायद तुझको भी हैरानी होगी।।

जिस डाली पर बैठे हुये हो अगर उसी को काटोगे तुम।
ये मत भूलो ऐसी तुम्हारी हर हरकत बचकानी होगी।।

गीतिका

जब खूं में रह सके न रवानी तमाम उम्र।
फिर कैसे रह सकेगी जवानी तमाम उम्र।।

दिल का हरेक राज़ निगाहों ने कह दिया।
कैसे छिपेगी दिल की कहानी तमाम उम्र।।

सुनकर मेरी ग़ज़ल को जला है मेरा रक़ीब।
मैंने तो की है शोला बयानी तमाम उम्र।।

हंस हंस के ग़म सहे हैं ज़माने के इसलिए।
आया न मेरी आंख में पानी तमाम उम्र।।

मुफ़लिस दहेज़ का न जो कर पाया इंतज़ाम।
डोली चढ़ी न बेटी सयानी तमाम उम्र।।

उल्फ़त के गुलिस्तान को सींचा है खून से।
मैंने किया लहू को यूं पानी तमाम उम्र।।

बनके तुम्हारी याद महकती रही सदा।
जूही चमेली रात की रानी तमाम उम्र।।

जिसके लिये ये जान और ईमान दे दिये।
उसने ही मेरी क़द्र न जानी तमाम उम्र।।

मैंने "मयंक" जिसकी हरिक बात मान ली।
बात उसने मेरी एक न मानी तमाम उम्र।।

गीतिका

ये बहारें ये नज़ारे किस लिए।
तुम बिना ये चांद तारे किस लिए।।

जिसकी बातें तुम कभी सुनते नहीं।
वो तुम्हें फिर भी पुकारे किस लिए।।

आड़ में अब धर्म और ईमान की।
ये फ़सादात और नारे किस लिए।।

हो गया हो ग़र्क़ जो मझधार में।
उसकी किस्मत में किनारे किस लिए।।

इल्म और ताक़त हो जिसके पास में।
ज़िन्दगी रोकर गुज़ारे किस लिए।।

अपनी ही उलझन न जो सुलझा सका।
ग़ैर की जुल्फें संवारे किस लिए।।

गीतिका

जब से सूरज मेरे सर पर आया है।
मेरे क़द से छोटा मेरा साया है।।

मेरी मैयत पाक है दफ़्न करो इसको।
मैंने इसको अश्कों से नहलाया है।।

ऐ नादां दिल समझ इशारा हिचकी का।
शायद उसने याद तुझे फ़रमाया है।।

अश्कों के बदले उनको खुशियाँ देकर।
एक पुराना मैंने क़र्ज़ चुकाया है।।

बदली में है चांद, चांदनी मद्धम है।
शायद मेरा यार कहीं शरमाया है।।

सर से पावों तक तुम हुस्न की मूरत हो।
फ़ुर्सत में ईश्वर ने तुम्हें बनाया है।।

जब से तेरी पूजा की काफ़िर बनकर।
इश्क़ो मोहब्बत का ईमान बनाया है।।

"मयंक" की काया पल्टी दुखदर्द मिटे।
जब–जब तेरी यादों ने बहलाया है।।

गीतिका

प्यार में क्यूं धोखा खा बैठा ।
सोच रहा हूँ बैठा बैठा ।।

मेरी उलझन देख के वो भी ।
अपनी ज़ुल्फ़ें उलझा बैठा ।।

ईश्वर ने खुशियाँ दी मुझको ।
उसको इसका ग़म खा बैठा ।।

तीर नयन के घायल कर गए ।
उसका ठीक निशाना बैठा ।।

कल वो जो मेरा अपना था ।
आज परायों में जा बैठा ।।

जब न यक़ीं आया कुछ उनको ।
मैं उनकी क़स्में खा बैठा ।।

फूलों से मैं प्रीत लगाकर ।
दिल कांटों में उलझा बैठा ।।

मेरी कहानी सुन, पत्थर भी।
आँखों में आंसू ला बैठा ।।

जब "मयंक" ने धोखा खाया।
वो तेरे दर पर आ बैठा ।।

गीतिका

जब से हालात अपने संवरने लगे।
वो हमें, हम उन्हें प्यार करने लगे।।

वो जो श्रृंगार–घर में संवरने लगे।
झूम के आइने नृत्य करने लगे।।

दोस्त भी दुश्मनों की तरह हो गए।
हम जो तेरी नजर से उतरने लगे।।

जिनपै तेरा करम हो गया वो सभी।
उड़ती चिड़ियों के पर भी कतरने लगे।।

जब से दौलत गई और शुहरत गई।
गुण हमारे सभी को अखरने लगे।।

गीतिका

हर कोई ले ले जहां में जोग ये मुमकिन नहीं,
इस जहां को छोड़ दें सब लोग ये मुमकिन नहीं।

जन्म लेते ही ग़मों का सिलसिला चलने लगे,
जन्म से बढ़कर हो कोई रोग ये मुमकिन नहीं।

कौन रोता है किसी के वास्ते यूं उम्र भर,
ज़िन्दगी भर हो किसी का सोग ये मुमकिन नहीं।

भूख से जो मर गया पंगत हो उसकी कर्ज़ से,
रूह तक पहुंचे कभी भी भोग ये मुमकिन नहीं।

आसमां पर रात में चमके अगर हरसू 'मयंक',
चांदनी को तुम कहो संजोग ये मुमकिन नहीं।

गीतिका

दर्द में लब पै आह न लाना, सब के बस की बात नहीं।
हंसते हंसते अश्क छुपाना सबके बस की बात नहीं।।

हमने हुस्ने मुजस्सम को दिल देकर ये महसूस किया।
पत्थर से शीशा टकराना सबके बस की बात नहीं।।

मुद्दत से अश्कों के दीपक रौशन हैं इन पलकों पर।
दर्दो अलम का जश्न मनाना सबके बस की बात नहीं।।

दुनिया की परवाह न करके हमने प्यार किया तुमसे।
तूफ़ानों में दीप जलाना सबके बस की बात नहीं।।

हमने इक मग़रूर को अपने प्यार में पागल किया मयंक।
सहरा में यूं फूल खिलाना सबके बस की बात नहीं।।

❖ ❖ ❖

मुझको नज़रों से पिलाने की ज़रूरत क्या थी।
मुझको दीवाना बनाने की ज़रूरत क्या थी ।।
गर ज़माने की निगाहों से गिराना था मुझे।
अपनी नज़रों में बसाने की ज़रूरत क्या थी।।

गीतिका

क़र्ज़ क्या है भीख भी इसको गवारा है मियां।
ख़्वाहिशों ने इस क़दर इंसां को मारा है मियां।।

दूर तक पानी ही पानी है मगर प्यासे हैं लोग।
ज़िन्दगी खारे समुन्दर का नज़ारा है मियां।।

वो फ़क़त दो गज़ ज़मीं में क़ैद होकर रह गया।
जो ये कहता था कि ये सब कुछ हमारा है मियां।।

वो वतन पर मिट गए और ये मिटा देंगे वतन।
जानते हैं किस तरफ़ मेरा इशारा है मियां।।

लालची मां बाप से वो कब बग़ावत कर सका।
बस इसी ख़ातिर तो वो अब तक कंवारा है मियां।।

अब यही बेहतर है तुम मझधार में बहते रहो।
तुमको जिसकी आस है ढहता किनारा है मियां।।

दूर कितनी भी हो मंज़िल, क्यूँ न पहुँचेगा मयंक।
फिर किसी ने प्यार से उसको पुकारा है मियां।।

गीतिका

जख़्म देखे आपने वो जो मिरे तन पर लगे।
वो नहीं देखे जो मेरे जिस्म के अंदर लगे।।

गो ज़मीं में दफ़्न हो जाना है सबको एक दिन।
काम ऐसा कीजिए जो आसमां से सर लगे।।

नाखुदा जिनका खुदा था इस भरी मझधार में।
वो सफीने ही फ़क़त आकर किनारे पर लगे।।

चाहे गुरूद्वारा हो, गिरिजा हो, कि हों दैरो हरम।
इन सभी में एक ही मालिक का मुझको घर लगे।।

सोचता हूँ दुश्मनों से दोस्ती कर लूं मगर।
जो पुराने दोस्त हैं, उन दोस्तों से डर लगे।।

दूर उड़कर क्या गया खुद से बिछुड़ कर रह गया।
जब मेरी घायल तमन्नाओं को यारों पर लगे।।

जिनकी जानिब हो न पाई उसकी नज़रें ऐ "मयंक"।
इस जहां में उन सभी लोगों के नैना तर लगे।।

गीतिका

अपने गरीबां में झांके फिर मेरी ओर निहारे वो।
जिसने पाप कभी न किया हो पहला पत्थर मारे वो।।

गांधी के बेटे हैं फिर भी मीत हैं दुश्मन की ख़ातिर।
लेकिन शर्त है पहले आकर मैदां में ललकारे वो।।

मुझको डर है अपनी ही ना उसको न नज़र लग जाए कहीं।
आईने में देख के जब भी अपना रूप संवारे वो।।

पैग़म्बर अवतार जहां में यूं ही जन्म नहीं लेते।
राह दिखाते सारे जग को बनकर चांद सितारे वो।।

हिम्मत की पतवार न छोड़े जो ग़म के तूफ़ानों में।
मझधारों से पार उतारे अपनी नाव किनारे वो।।

जिसको पता है सारे जगत का एक ही दाता है वो "मयंक"।
छोड़ के रब बंदों के आगे क्यूं कर हाथ पसारे वो।।

✤ ✤ ✤

हसीन चांद नहीं, ख़ुशनुमा गुलाब नहीं।
तू लाजवाब है तेरा कोई जवाब नहीं।।

तुम्हारा जिस्म है ऐसा कि जैसे ताजमहल।
तुम्हारे जैसा जहां में कोई शबाब नहीं।।

गीतिका

जब तू बहुत उदास लगी है ।
सावन पतझर मास लगे है।।

प्यार वफा यारी दिलदारी।
सोचो तो इतिहास लगे है।।

रूठ के मुझसे जाने वाला।
दूर है लेकिन पास लगे है।।

इक पल की भी तुझसे दूरी।
बरसों का वनवास लगे है।।

अपने आंसू पी लेता हूँ।
जब जब मुझको प्यास लगे है।।

जब तुम हंसते हो उपवनमें।
पतझड़ भी मधुमास लगे है।।

आज के दौर में प्यार की बातें।
सोचूं तो परिहास लगे है।।

तू ही प्रथम तू ही अंतिम है।।
कण कण तेरा वास लगे है।

तेरे कारण दुनियां छोड़ी।।
जीवन अब सन्यास लगे है।

जब भी हटें चेहरे से जुल्फें।
"मयंक" का आभास लगे है।

गीतिका

बोल किधर जाएँ हम भाई।
आगे कूआँ पीछे खाई।।

दर्द तभी समझाा ग़ैरों का।
पैर जो मेरे फटी बिवाई।।

पेड़ काट कर साया ढूढ़ें।
हम कितने नादान हैं भाई।।

ढूँढ रहा है नेकी लेकर।
शहर में कूआं हातिमताई।।

तेरा घर भी जल सकता है।
इन दंगों में ओ बलवाई।।

जब तुम पहलू में आते हो।
मौसम लेता है अंगड़ाई।।

रुक ओ मयंक अभी आता हूँ।
किसने ये आवाज़ लगाई।।

गीतिका

कर्ज़ क्या है भीख भी इसको गवारा है मियां।
ख़्वाहिशों ने इस क़दर इंसां को मारा है मियां।।

दूर तक पानी ही पानी है मगर प्यासे हैं लोग।
ज़िन्दगी खारे समुन्दर का नज़ारा है मियां।।

वो फ़क़त दो गज़ ज़मी में क़ैद होकर रह गया।
जो ये कहता था कि ये सब कुछ हमारा है मियां।।

वो वतन पर मिट गए और ये मिटा देंगे वतन।
जानते हैं किस तरफ़ मेरा इशारा है मियां।।

लालची मां बाप से वो कब बगावत कर सका।
बस इसी खातिर तो वो अब तक कंवारा है मियां।।

अब यही बेहतर है तुम मझधार में बहते रहो।
तुमको जिसकी आस है ढहता किनारा है मियां।।

दूर कितनी भी हो मंजिल, अब तो पहुँचेगा मयंक।
फिर किसी ने प्यार से उसको पुकारा है मियां।।

हमारी जिन्दगानी के भी नेहरू पासबां थे तुम।।

गीतिका

याद रहते हैं भले इंसान मर जाने के बाद।
फूल देते रहते हैं खुशबू बिखर जाने के बाद।।

इश्क़ की गहराइयों को जानना चाहा बहुत।
डूबने पहुँचा मगर दरिया उतर जाने के बाद।।

आरजू जन्नत की लेकर दर बदर भटका किया।
स्वर्ग लेकिन मिल सका बस अपने घर जाने के बाद।।

जाने वालों को भला मैं किसलिए इल्ज़ाम दूँ।
कौन वापस लौट पाया है उधर जाने के बाद।।

उम्र भर हंसते रहे जो मेरी वहशत पै "मयंक"।
रो रहे हैं वो मेरी मैयत गुज़र जाने के बाद।।

✤ ✤ ✤

कोई कहता यहां तलाश करें।
कोई कहता वहां तलाश करें।।
किससे तेरा अता पता पूछें।
तू ही बतला कहां तलाश करें।।

सितमगरों का चलन इख़्तियार मत करना ।
बवक़्ते शाम हवाओं पै वार मत करना ।।
कहेगा कौन ये फिर फ़ाख़्ता के बच्चों से ।
तुम अपनी मां का कभी इंतज़ार मत करना ।।

'मयंक'

के० के० सिंह ' मयंक ' की रचनायें हिन्दी में 'मयंक के गीत एवं गीतकाएँ' के नाम से प्रकाशित करते हुऐ हमें अपार हर्ष हो रहा है, हमें आशा है कि हिन्दी, उर्दू की मिली जुली गंगा जमुनी ज़ुबान में लिखी गयीं मयंकजी की ये रचनाऐं आपको अवश्य पसंद आयेंगी।
के० के० सिंह 'मयंक' हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं का एक चर्चित नाम है। आप का जितना अधिकार उर्दू पर है उतना ही हिन्दी पर भी। आपका कलाम जन-जन तक ग़ज़लों, नज़्मों एवं गीतों के माध्यम से पहुँच चुका है। देश के जाने माने प्रकाशक, "स्टार पाकेट बुक्स", "डायमण्ड पाकेट बुक्स", तथा "साधना पाकेट बुक्स" आपके कलाम को हजारों हजारों की तादाद में प्रकाशित कर, जनमानस में पहुँचा चुके हैं ।
देश के जाने माने गायकों ने आपकी रचनाऐं मंचों, रेडियो तथा दूरदर्शन के माध्यम से स्वरबद्ध करके प्रसारित की हैं। कवि सम्मेलनों एवम् मुशायरों में भी आपकी रचनाओं को खूब सराहा जाता है।
फिल्मों एवं टी० वी० सीरियल के गीतकार के० के० सिंह 'मयंक' की रचनायें, ग्रामोफ़ोन रिकार्डस तथा वेस्टर्न, वीनस एवं एच०एम०वी० जैसी प्रसिद्ध कम्पनियों के म्यूज़िक कैसेटस पर भी उपलब्ध हैं।
हमें उम्मीद है ये पुस्तक आपको आवश्य पसंद आऐगी। पुस्तक पढ़कर अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराऐं ।

-प्रकाशक

कवि : कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'
उपनाम : मयंक
स्थाई पता : H.I.G. 5
न्यू शाहगंज आगरा